सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 11 ● अंक: 288 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, बुधवार 26 नवम्बर, 2025
मूल्य ₹ 3/-

अपने भीतर एक अनकही कहानी रखने से बड़ी कोई पीड़ा नहीं है।
-माया एंजिलो

टी20 विश्व कप की सात फरवरी... 7 | हिड़मा के एनकाउंटर पर सियासी... 3 | राबड़ी देवी को सरकारी आवास... 2

भारत-चीन क्या लड़ाई का पहला अध्याय खुल चुका है?

अरूणाचल प्रदेश के जरिये चीन की कूटनीति

» नाम बदलने का खेल ताकि मुद्दा जिंदा रहे

» दृढ़ता से खड़ा है भारत एक इंच भी नहीं हटेगा पीछे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

अरूणाचल का नाम बदलने पर होता है बार-बार बवाल

नई दिल्ली। एक बार फिर ड्रैगन ने अपनी चाल बदली है। ड्रैगन यानि चीन द्वारा अरूणाचल प्रदेश के कई हिस्सों के नाम बदलने की कवायद के पीछे की मंशा अब साफ हो चली है। चीन के ताजा दावों को भारत ने खारिज करते कहा है कि अरुणाचल प्रदेश भारत का अविभाज्य और अटूट हिस्सा है भारत ने चीन के दावों को खारिज कर दिया है। भारत के लिए अरुणाचल सिर्फ एक राज्य नहीं सभ्यता, सुरक्षा, रणनीति और संप्रभुता का प्रतीक है।

वहीं चीन के लिए अरुणाचल सिर्फ भूभाग नहीं विस्तारवाद, तिब्बत नियंत्रण और एशिया में सुपरपावर बनने की सीढ़ी है। यही वह जगह है जहां भू-राजनीति अपनी सबसे खतरनाक शक्ल में दिखाई देती है। कितना अजीब है कि जहा भारतीय जवान सीमा पर कड़ाके की ठंड में गश्त करते हुए तराई की वादियों को निहारते हैं वहीं बीजिंग के सत्ता गलियारों में बैठी नौकरशाही नक्शों पर रबड़ चलाकर नाम बदलने की कवायद में लगी रहती है। एक तरफ भारत इलाके में सड़कें, ब्रिज, एयरफोर्स बेस, स्मार्ट बॉर्डर सिस्टम बनाकर वास्तविक नियंत्रण को मजबूत कर रहा है तो दूसरी तरफ चीन पुराने नक्शे, बदलते नाम, और नागरिकों की पैठ के जरिये दावा जिंदा रखने की कोशिश करता है।

एक बात साफ है

वर्ल्ड पालिटिक्ल एनालिस्ट डीएन त्रिपाठी कहते हैं कि ताइवान समुद्री जंग का केंद्र है लेकिन एशिया का भू-रणनीतिक थर्मामीटर अरुणाचल है। क्योंकि यहां जो सन्नाटा है वह तैयार होते तूफान जैसा है। चीन का असली डर यह है कि भारत एशिया का नया निर्णायक शक्ति-केंद्र बन रहा है। और चीन की असली मंशा यह है कि तिब्बत पर अपना नियंत्रण पक्का करने के लिए अरुणाचल पर दावा जिंदा रखे ताकि भविष्य में कोई भू-राजनीतिक सौदा हो तो उसके पास मोलभाव की डील टेबल पर चाबी रखी हो।

अरूणाचल की बेटी से बदतमीजी पर भारत ने चीन को लताड़ा

अरुणाचल की निवासी और भारतीय नागरिक पेमा वांगजोम थोंगडोक को जबरन 15 घंटे रोकने को लेकर लगे आरोपों से भी पल्ला झाड़ है। चीनी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता ने माओ निंग ने कहा कि जंगनान चीन का क्षेत्र है। बता दें कि चीन भारत के अभिन्न अंग अरुणाचल प्रदेश को जंगनान कहता है। अरुणाचल प्रदेश पर चीनी विदेश मंत्रालय की टिप्पणी पर भारत सरकार ने कड़ा जवाब दिया है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि अरुणाचल प्रदेश भारत का अटूट और अखंड अंग है। चीनी पक्ष चाहे कितनी ही दफा इस सच्चाई से इनकार करे, लेकिन सच बदल नहीं सकता। चीन ने कहा था कि जंगनान उसका क्षेत्र है। भारत की ओर से अवैध तौर पर बनाए गए तथाकथित अरुणाचल प्रदेश को उसने स्वीकार नहीं किया। गौरतलब है कि अरुणाचल प्रदेश को चीन जंगनान कहकर बुलाता है। चीन ने अरुणाचल प्रदेश को लेकर फिर अपना पुराना राग दोहराया है। चीन ने कहा कि उसने कभी अरुणाचल प्रदेश को मान्यता नहीं दी।

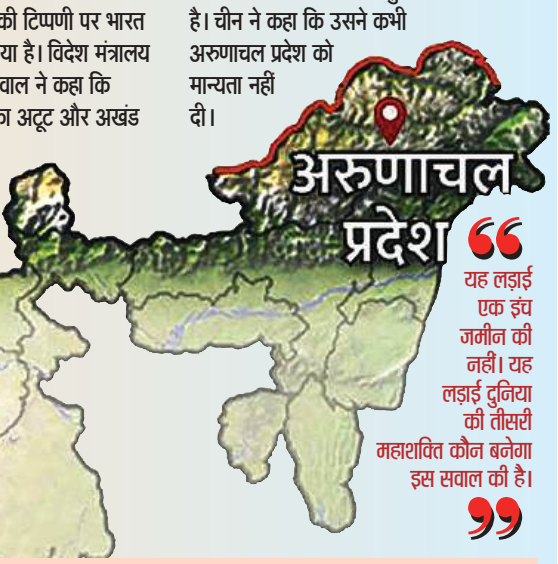

"यह लड़ाई एक इंच जमीन की नहीं। यह लड़ाई दुनिया की तीसरी महाशक्ति कौन बनेगा इस सवाल की है।"

चीन को मुंहतोड़ जवाब देगा ताइवान

ताइवान ने चीन की आक्रामकता को मुंहतोड़ जवाब देनी की तैयारियां शुरू कर दी हैं। ताइवान के राष्ट्रपति लाई चिंग-ते ने वाशिंगटन पोस्ट के एक लेख में कहा कि देश अपनी रक्षा के दृढ़ संकल्प को दर्शाने के लिए 40 बिलियन डॉलर का अतिरिक्त रक्षा बजट पेश करेगा। इस बजट में जरूरी नए अमेरिकी हथियारों की खरीद की योजना भी शामिल है। राष्ट्रपति चिंग-ते के इस बयान से चीन को मिर्ची लगना तय है। बीते पांच वर्षों में चीन ने ताइवान को अपने देश का हिस्सा बताने के दावों को पुख्ता करने के लिए ताइपे पर सैन्य और राजनीतिक दबाव बढ़ा दिया है। हालांकि, ताइवान इसे दृढ़ता से खारिज करता रहा है। ताइवान को वाशिंगटन से अपनी रक्षा पर ज्यादा खर्च करने के लिए भी गुजारिश करनी पड़ रही है, जो यूरोप पर अमेरिका के दबाव को दर्शाता है। इस साल अगस्त महीने में लाई ने कहा था कि उन्हें उम्मीद है कि 2030 तक रक्षा व्यय सकल घरेलू उत्पाद के 5 फीसदी तक पहुंच जाएगा।

पासपोर्ट पर सवाल

यह लड़ाई एक इंच जमीन की नहीं। यह लड़ाई दुनिया की तीसरी महाशक्ति कौन बनेगा इस सवाल की है। और इस लड़ाई का पहला अध्याय खुल चुका है। पासपोर्ट पर सवाल। नाम बदलने की नोटिफिकेशन। राजनयिक तनाव की प्रेस रिलीज। संसद से लेकर सेना तक हर स्तर पर हलचल। भारत दृढ़ खड़ा है। चीन पीछे हटने को तैयार नहीं। अरुणाचल की चुप्पी के पीछे इतिहास की सबसे तेज़ सबसे शांत लेकिन सबसे खतरनाक जंग चल रही है जिसमें हथियार विचार हैं, सैनिक बयान हैं, और मोर्चा भू-राजनीति है।

राबड़ी देवी को सरकारी आवास खाली करने की नोटिस पर बवाल

» सरकार के फैसलों पर दिखने लगा दबाव

» राजद ने भाजपा पर साधा निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी को 10 सर्कुलर रोड आवास खाली करना होगा। भवन निर्माण विभाग की ओर से इसको लेकर नोटिस जारी हो गया है। इसी के साथ बिहार में राजनीतिक बवाल भी आरंभ हो गया है। राजद ने इसे भाजपा की कारगुजारी बताया है।

हालांकि उन्हें नया आवास आवंटित हो गया है। अब इस खबर के सामने आने के बाद सियासी गलियारे में कई तरह की चर्चाएं शुरू हो गई हैं। हर तरफ 10 सर्कुलर रोड स्थित आवास की बातें हो रही हैं, कई सवाल भी उठाए जा रहे हैं। पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी चाहे किसी भी पद पर रही हों 10 सर्कुलर आवास उन्हीं के नाम पर हमेशा आवंटित रहा है। करीब डेढ़ दशक तक बिहार की सत्ता में बने रहने के बाद जब लालू परिवार 2005 में विपक्ष में आया तो राबड़ी देवी को एक अणे मार्ग (मुख्यमंत्री आवास) छोड़ना पड़ा. इसके बाद यहां रहने के लिए नीतीश कुमार चले गए. उसी वक्त राबड़ी देवी को पूर्व मुख्यमंत्री की हैसियत से 10 सर्कुलर आवास आवंटित किया गया।

राबड़ी देवी के नाम से आवंटित आवास में लालू परिवार करीब दो दशक से रह रहा है. सबसे बड़ी बात है कि इतने वर्षों में कभी नीतीश कुमार ने इस बंगले पर नजर टेढ़ी नहीं की, लेकिन इस बार बिहार विधानसभा चुनाव (2025) के बाद बीजेपी पहले से ज्यादा ताकतवर होकर उभरी है। सबसे अधिक सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनकर आई है। ऐसे में चर्चा इस बात की भी है कि बीजेपी के मजबूत होने का असर सरकार के फैसलों पर दिख रहा है।

लालू प्रसाद का 'अपमान' कर रही सरकार : रोहिणी आचार्य

नीतीश सरकार के इस निर्णय पर राष्ट्रीय जनता दल (राजद) प्रमुख लालू प्रसाद और राबड़ी देवी की बेटी रोहिणी आचार्य ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में आरोप लगाया कि सरकार लालू प्रसाद का ''अपमान'' कर रही है। रोहिणी ने अपने पोस्ट में भवन निर्माण विभाग के आदेश की प्रति साझा की है और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर तंज कसते हुए लिखा, सुशासन बाबू का विकास मॉडल। करोड़ों लोगों के मसीहा लालू प्रसाद का अपमान करना पहली प्राथमिकता। घर से तो निकाल देंगे, बिहार की जनता के दिल से कैसे निकालिएगा? सेहत नहीं तो कम से कम लालू जी के राजनीतिक कद का सम्मान रखें। रोहिणी ने राजद नेता और अपने छोटे भाई तेजस्वी यादव और उनके कुछ सहयोगियों पर निशाना साधते हुए कहा था, ''मेरा कोई परिवार नहीं है। अब आप जाकर तेजस्वी, संजय और रमीज़ से पूछिए कि पार्टी का ऐसा हाल क्यों हुआ? मुझे मारने के लिए चप्पल उठाई गई और गंदी-गंदी गालियां दी गईं। रोहिणी 2024 के लोकसभा चुनाव में छपरा सीट से लड़ी थीं और हार गई थीं।

'गिर ही गए, लेकिन इतना नीचे नहीं गिरना था : तेज प्रताप

राबड़ी के आवास बदलने के मामले में उनके पुत्र और जनशक्ति जनता दल (जेजेडी) के संस्थापक तेज प्रताप यादव ने भी 'एक्स' पर पोस्ट कर नीतीश सरकार पर तंज कसा है। तेजप्रताप ने लिखा, ''छोटे भाई (नीतीश कुमार) ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली और बड़े भाई के बंगले को खाली करने का आदेश दे दिया।'' उन्होंने लिखा, ''गिर ही गए, लेकिन इतना नीचे नहीं गिरना था। इतिहास दोनों हाथों में कालिख लिए नीतीश कुमार का इंतजार कर रहा है।

उम्मीद है कि सरकारी संपत्ति को नुकसान नहीं करेंगी पूर्व सीएम : नीरज कुमार

आवास खाली करने को लेकर जारी हुए नोटिस के बाद बीजेपी ने तंज कसा है। बीजेपी के प्रवक्ता नीरज कुमार ने एक्स पर पोस्ट कर कहा, 10 सर्कुलर रोड का आवास खाली करते वक्त, नेता प्रतिपक्ष विधान परिषद श्रीमती राबड़ी देवी जी से आग्रह है कि इस बार अपने बेटे की तरह घर को खाली करते वक्त सरकारी संपत्ति की चोरी नहीं करेंगे। सरकारी संपत्ति को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे। बाथरूम से नल और टोटी नहीं चोरी करेंगे! आपके परिवार का ट्रैक रिकॉर्ड यही रहा है. ध्यान रखिएगा हम लोग की नजर अभी से रहेगी, आपके बेटे और पति भी इस घर में रहते हैं जिनका ट्रैक रिकॉर्ड कुछ ऐसा ही है, आप भी अपने बेटे और पति पर नजर रखेंगे कि कहीं कुछ चोरी नहीं ले पाए।

तेजस्वी यादव गए थे कोर्ट

सबसे बड़ा सवाल है कि आखिर राबड़ी आवास को इतने सालों के बाद खाली कराने का क्या मकसद है? इस बंगले को क्यों खाली कराया जा रहा है? इसके लिए तेजस्वी यादव के एक केस से समझना होगा। 2015 में जब महागठबंधन की सरकार में तेजस्वी यादव डिप्टी सीएम बने तो उन्हें 5 देशरत्न मार्ग आवास आवंटित किया गया। 2017 में नीतीश कुमार ने जब पाला बदला और वे बीजेपी के साथ सत्ता में आ गए तो सुशील कुमार मोदी डिप्टी सीएम बने और तेजस्वी यादव को 5 देशरत्न मार्ग खाली करने का आदेश दिया गया। इस आदेश के बाद तेजस्वी यादव हाई कोर्ट चले गए. हालांकि उन्हें राहत नहीं मिली।

कुछ लोग मुख्यमंत्री बनने के सपने देख रहे : सुक्खू

» सीएम बोले- भाजपा में कांग्रेस से गया एक गुट होने लगा मजबूत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

धर्मशाला। मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने शिमला से धर्मशाला पहुंचने के बाद पत्रकारों से बातचीत करते हुए बताया कि कांगड़ा में इस बार विधानसभा का शीतकालीन सत्र इतिहास का सबसे लंबा सत्र होगा। इस सत्र में भाजपा को अपने मुद्दे तथ्यों और प्रमाणों के साथ उठाने का पूरा मौका मिलेगा।

मुख्यमंत्री ने बताया कि पहले नववर्ष और क्रिसमस के समय धर्मशाला में विधानसभा का सत्र होता था, जिसके कारण होटल संचालकों की बुकिंग रद्द हो जाती थी और होटल व्यवसाय प्रभावित होता था। लेकिन इस बार सत्र नववर्ष से पहले आयोजित किया जा रहा है, जिससे कांगड़ा के पर्यटन और होटल व्यवसाय को भी लाभ होगा। सुक्खू ने कहा कि कांगड़ा को पर्यटन राजधानी बनाने के लिए प्रयास जारी हैं और जल्द ही एयरपोर्ट का विस्तार और भूमि अधिग्रहण का कार्य पूरा किया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि कांग्रेस को नए अध्यक्ष के रूप में विनय कुमार का नेतृत्व मिला है, जो तीन बार के विधायक और विधानसभा उपाध्यक्ष रहे हैं। उनका लंबा अनुभव कांग्रेस पार्टी को मजबूती प्रदान करेगा। सुक्खू ने यह भी बताया कि हिमाचल में अनुसूचित जाति की जनसंख्या दूसरी सबसे बड़ी है और हाईकमान ने इसी वर्ग के एक नेता को पार्टी का अध्यक्ष चुना है। मुख्यमंत्री ने भाजपा के एक गुट को निशाना बनाते हुए कहा कि कुछ नेता अपनी महत्वाकांक्षाओं को लेकर सरकार गिराने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन जनता के आशीर्वाद से कांग्रेस ने और अधिक सीटें जीतीं। उन्होंने यह भी कहा कि कांग्रेस से भाजपा में गए कुछ बिके हुए नेता मुख्यमंत्री बनने का सपना देख रहे हैं, लेकिन वे मुख्यमंत्री तो क्या मंत्री तक नहीं बन पाएंगे। सुक्खू ने अंत में कहा कि अगली बार कांग्रेस धर्मशाला विधानसभा क्षेत्र की सीट भी जीतेगी और सरकार का विकास कार्य जारी रहेगा।

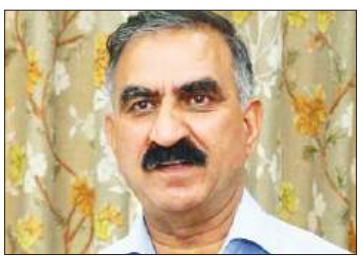

भाजपा के मुद्दे तथ्यों से परे

मुख्यमंत्री सुक्खू ने विधानसभा सत्र में भाजपा द्वारा उठाए जाने वाले मुद्दों पर कहा कि भाजपा को मुद्दे तथ्यों के साथ उठाने चाहिए, न कि राजनीतिक लाभ या सनसनी फैलाने के लिए। अगर भाजपा सच्चाई के साथ कोई भी मुद्दा सदन में लाती है, तो सरकार उसका समर्थन करेगी। उन्होंने कहा कि सरकार विधानसभा सत्र को सुचारू रूप से चलाने के लिए पूरी तरह तैयार है और विपक्ष को वॉकआउट करने का अधिकार है। उन्होंने कहा कि भाजपा प्रदेश में पांच गुटों में बंटी हुई है और हर गुट चाहता है कि एक-दूसरे के मुद्दे पर वॉकआउट हो। ताकि दिल्ली जाकर हाईकमान को बता सकें, क्योंकि दिल्ली में उनका फटकार लगती है।

2027 में यूपी विधानसभा चुनावों में राम मंदिर मुद्दे को इस्तेमाल करने की तैयारी : राशिद अल्वी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। पूर्व कांग्रेस सांसद राशिद अल्वी ने अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर पर भगवा झंडा फहराने को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर सवाल उठाया और पूछा कि क्या वह मस्जिद, गुरुद्वारा या चर्च पर ऐसा करेंगे।

अल्वी ने प्रधानमंत्री मोदी पर 2027 में उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों से पहले राम मंदिर मुद्दे का इस्तेमाल राजनीतिक लाभ के लिए करने का आरोप लगाया और उन्हें भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू से धर्मनिरपेक्षता सीखने को कहा। कांग्रेस नेता ने कहा कि संविधान के अनुसार इस देश का कोई धर्म नहीं है, फिर प्रधानमंत्री यह झंडा क्यों फहराना चाहते हैं? क्या वह मस्जिद, गुरुद्वारा या चर्च पर झंडा फहराएंगे?

दलित होने का खामियाजा भुगत रहा : अवधेश प्रसाद

» बोले सपा सांसद- इसी कारण ध्वजारोहण में नहीं किया आमंत्रित

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। फैजाबाद के सांसद अवधेश प्रसाद ने मंगलवार को आरोप लगाया कि उन्हें अयोध्या में राम मंदिर के ध्वजारोहण समारोह में इसलिए नहीं बुलाया गया क्योंकि वह दलित समुदाय से हैं। यह कहते हुए कि भगवान राम सभी के हैं, समाजवादी पार्टी के सांसद ने दावा किया कि उन्हें न बुलाने का फैसला संकीर्ण मानसिकता है और उन्होंने संविधान के सम्मान, समानता और सम्मान के लिए अपनी लड़ाई जारी रखने का संकल्प लिया।

अवदेश प्रसाद ने कहा कि रामलला के दरबार में ध्वजारोहण समारोह में मुझे न बुलाने का कारण यह है कि मैं दलित समुदाय से हूँ। इसलिए यह राम का सम्मान नहीं, बल्कि किसी और की संकीर्ण सोच का परिचय है। राम सभी के हैं। मेरी लड़ाई किसी पद या निमंत्रण के लिए नहीं, बल्कि सम्मान, समानता और संविधान के सम्मान के लिए है। इससे पहले दिन में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर के 191 फुट ऊंचे शिखर पर भगवा ध्वज फहराया, जो मंदिर निर्माण के पूरा होने का प्रतीक था। सूर्य और कोविदर वृक्ष अंकित हैं, जिनमें से प्रत्येक सनातन परंपरा में निहित गहन आध्यात्मिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है। समकोण त्रिभुजाकार ध्वज 10 फीट ऊँचा और 20 फीट लंबा है। कोविदर वृक्ष मंदार और पारिजात वृक्षों का एक संकर वृक्ष है, जिसे ऋषि कश्यप ने बनाया था, जो प्राचीन वनस्पति संकरण को दर्शाता है।

मुझे न बुलाना जनता का अनादर

राम मंदिर के धर्मध्वजा कार्यक्रम में मुझे न बुलाना जनता का अनादर है। सपा सांसद ने कहा कि उनका मानना था कि जनप्रतिनिधि के होने के नाते उनको भी इस आयोजन में बुलाया जाएगा, लेकिन मुझसे कोई बात नहीं हुई। इससे अयोध्या की जनता नाखुश है। कहा कि भाजपा ने जिस तरह से अयोध्या की जनता का अनादर किया है, वह ठीक नहीं है। कहा कि इस आयोजन में देश के दूसरे हिस्सों के लोग शामिल होने के लिए आए हैं, लेकिन अयोध्या से जुड़े लोगों को नहीं बुलाना निराशाजनक है।

बिखराव की राजनीति कर रही भाजपा : जियाउर रहमान

भाजपा देश में बिखराव की राजनीति कर रही है। यह बात मंगलवार को सैफई में हुए शादी समारोह में शामिल होने आए संभल से सपा के सांसद जियाउर रहमान ने कहा। उन्होंने कहा कि अयोध्या में हुआ कार्यक्रम भाजपा का कार्यक्रम था। कहा कि सपा का पीडीए एजेंडा इतना मजबूत है कि भारतीय जनता पार्टी डरी और सहमी बनी हई है। 2027 के उत्तर प्रदेश विस चुनाव में सपा बड़ी जीत दर्ज करेगी।

इमरान मसूद ने किया अवधेश प्रसाद को समर्थन

सांसद इमरान मसूद ने इंटरव्यू में दिए अपने बयान में यह बातें कहीं। उन्होंने कहा कि देश में हर किसी को अपने धर्म का पालन की इजाजत है। प्रधानमंत्री अयोध्या जा रहे हैं। वह ध्वजारोहण कर रहे हैं। यह अच्छी बात है। देश का प्रधानमंत्री किसी संसदीय क्षेत्र में जाएं और वहां के सांसद को आमंत्रित न किया जाए। इससे ज्यादा दुर्भाग्यपूर्ण कुछ नहीं हो सकता है। उन्होंने कहा कि भगवान राम मंदिर में नहीं मिलेंगे। वह तो सबरी के जूठे बेरों में मिलेंगे। राम मिलेंगे पंचवटी की छांव में। राम मिलेंगे मर्यादा से जीने में। उन्होंने कहा कि राम तो हनुमान जी के सीने में हैं।

हिड़मा के एनकाउंटर पर सियासी तूफान

दिग्विजय के सवालों से मप्र में मच गया संग्राम

» भाजपा का तीखा पलटवार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। छत्तीसगढ़ में कुख्यात नक्सली माड़वी हिड़मा के एनकाउंटर के बाद मामला अब मध्य प्रदेश की राजनीति तक पहुंच गया है। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह द्वारा इस कार्रवाई पर सवाल उठाए जाने के बाद प्रदेश में सियासी टकराव तेज हो गया है। मंत्री विश्वास सारंग ने भी आरोप लगाया कि दिग्विजय सिंह लगातार राष्ट्र विरोधी तत्वों का समर्थन करते नजर आते हैं। छत्तीसगढ़ के कुख्यात और इनामी नक्सली माड़वी हिड़मा की मौत के बाद मध्य प्रदेश में राजनीतिक हलचल तेज हो गई है।

पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह द्वारा एनकाउंटर की विश्वसनीयता पर सवाल उठाए जाने के बाद पूरा राजनीतिक माहौल गर्म हो गया है। दिग्विजय सिंह ने सोशल मीडिया पर बस्तर की सामाजिक कार्यकर्ता सोनी का वीडियो साझा किया। वीडियो में सोनी दावा कर रही हैं कि हिड़मा और उसके साथियों की मौत एनकाउंटर नहीं, बल्कि योजनाबद्ध हत्या थी। उनके मुताबिक पुलिस की टाइमलाइन संदिग्ध है। छह लोगों को पकड़कर मारा गया। ग्रामीणों का कहना है कि घटना स्थल पर नक्सली मौजूद ही नहीं थे। सोनी अंतिम संस्कार में भी शामिल हुई थीं और न्यायिक जांच की मांग कर रही हैं। 18 नवंबर को आंध्र प्रदेश के अल्लुरी सिताराम राजू जिले में पुलिस और माओवादियों के बीच मुठभेड़ में हिड़मा, उसकी पत्नी राजे और चार अन्य नक्सली मारे गए थे। हिड़मा पर कई बड़े हमलों के आरोप थे और वह सुरक्षा एजेंसियों की टॉप सूची में शामिल था।

इंडिया गेट पर किए प्रदर्शन पर भी रार

भारतीय जनता पार्टी ने इंडिया गेट पर वायु प्रदूषण के विरोध में हुए प्रदर्शन के दौरान माओवादी नेता मादवी हिडमा के समर्थन में कथित तौर पर नारे लगाए जाने के बाद कांग्रेस पर निशाना साधा। पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि मार्क्स और माओ का प्रदूषण उनके दिमाग में ज्यादा घना है। दिल्ली में बोलते हुए, राज्यसभा सांसद ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पहले ही चेतावनी दे चुके हैं कि कांग्रेस मुस्लिम लीग माओवादी पार्टी बन गई है। उन्होंने आगे कहा कि यह सबसे पुरानी पार्टी कठमुल्लों के समर्थन से सत्ता में आने का सपना देख रही है, जिसे त्रिवेदी ने बेहद खतरनाक बताया। त्रिवेदी ने कहा कि कुछ लोग इंडिया गेट पर अपने चेहरे पर नकाब लगाकर पहुंचे थे, मानो वे प्रदूषण के खिलाफ विरोध प्रदर्शन कर रहे हों। वहां पहुंचते ही उनके नकाब उतर गए और असली चेहरा सामने आ गया। उन्होंने एक मारे गए नक्सली कमांडर के समर्थन में नारे लगाने शुरू कर दिए। उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री ने कहा है कि कांग्रेस मुस्लिम लीग-माओवादी बन गई है... वायु प्रदूषण से ज्यादा, उनके दिमाग़ में मार्क्स और माओ का प्रदूषण घना है।

राष्ट्र विरोधी तत्वों का समर्थन करते नजर आते हैं दिग्विजय : सारंग

सोनी का वीडियो शेयर करते ही बीजेपी ने दिग्विजय सिंह पर तीखा प्रहार किया। मंत्री विश्वास सारंग ने भी आरोप लगाया कि दिग्विजय सिंह लगातार राष्ट्र विरोधी तत्वों का समर्थन करते नजर आते हैं। शहीद जवान पर एक शब्द नहीं, लेकिन नक्सली के लिए संवेदना! वे तुष्टीकरण की राजनीति में इतने आगे बढ़ चुके हैं कि देशद्रोही ताकतों का बचाव आदत बन गई है। सारंग ने दिग्विजय के बयान को देशहित के खिलाफ बताया। सांसद आलोक शर्मा ने कहा जब देश के जवान शहीद होते हैं, तब दिग्विजय चुप रहते हैं, लेकिन नक्सलियों और आतंकवादियों पर सवाल उठाने में सबसे आगे रहते हैं। इसी मानसिकता के कारण कांग्रेस बार-बार हार का सामना कर रही है।

मैं हिंसा के विरोध में हूं, मुद्दा आदिवासी अधिकारों का है: दिग्विजय सिंह

दिग्विजय सिंह ने स्पष्ट किया कि वे नक्सली हिंसा के खिलाफ हैं, लेकिन समाधान बातचीत और आत्मसमर्पण की नीति से निकल सकता है। उन्होंने कह कि असल मुद्दा आदिवासियों के सामाजिक-आर्थिक अधिकारों का है। पेसा कानून देश के शेड्यूल्ड एरिया में लागू नहीं किया जा रहा, जिससे आदिवासियों के अधिकार कमजोर हुए हैं। नक्सल क्षेत्रों के आदिवासियों के पास दस्तावेज कैसे होंगे? मतदाता सूची में नाम न जुड़ने का मतलब है कि उनकी नागरिकता खतरे में है। उन्होंने बीजेपी पर आरोप लगाया कि वह आदिवासी हितों के मुद्दों से हमेशा दूरी बनाकर चलती रही है।

दिग्विजय सिंह का नक्सलियों को खुला समर्थन : वीडी शर्मा

भाजपा सांसद और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने दिग्विजय सिंह के बयान पर तीखा पलटवार करते हुए कहा कि कुख्यात नक्सली हिड़मा के एनकाउंटर को फर्जी बताना दिग्विजय सिंह का देश विरोधी बयान है और यह नक्सलियों का खुला समर्थन है। उन्होंने कहा कि इससे पहले भी दिग्विजय सिंह बटाला हाउस एनकाउंटर को फर्जी बता चुके हैं। अब फिर वही नैरेटिव बनाते हुए नक्सलियों के पक्ष में बयान दे रहे हैं।

माननीय न्यायालय को इस पूरे मामले पर स्वत: संज्ञान लेकर कार्रवाई करनी चाहिए। वीडी शर्मा ने आगे कहा कि मैं दिग्विजय सिंह के इस बयान की कड़ी निंदा करता हूं। शहीदों का अपमान करने वाली राजनीति किसी भी रूप में स्वीकार्य नहीं है।

केरल में नगर पालिका चुनाव में अपनों का दावं

यूडीएफ नेता खुद कांग्रेस उम्मीदवारों के खिलाफ चुनाव लड़ रहे

» कांगेस व भाजपा में रार

» भाजपा का पलटवार कांग्रेस आंतरिक कलह छिपाने के लिए रच रही मनगढ़ंत कहानी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोच्चि। केरल में पलक्कड़ नगर पालिका कांग्रेस के लिए एक बड़ा सिरदर्द बन गई है। यूडीएफ नेता खुद कांग्रेस उम्मीदवारों के खिलाफ चुनाव लड़ रहे हैं। यहां तक कि पलक्कड़ के एक मौजूदा नगर पार्षद की पत्नी और कई अन्य लोग आधिकारिक कांग्रेस उम्मीदवारों के खिलाफ चुनाव लड़ रहे हैं।

कांग्रेस जिला समिति का एक सदस्य भी कांग्रेस उम्मीदवार के खिलाफ मैदान में है। उधर इन सबके बीच भाजपा ने कांग्रेस को घेरा है। भाजपा ने जोर देकर कहा कि ये आरोप पलक्कड़ स्थानीय निकाय चुनावों से पहले कांग्रेस की आंतरिक गुटबाजी से ध्यान हटाने की कोशिश हैं। स्थानीय निकाय चुनावों में नामांकन वापस लेने के लिए पलक्कड़ में भाजपा द्वारा कांग्रेस उम्मीदवार को पैसे की पेशकश करने के आरोपों के बाद, भाजपा पलक्कड़ जिला अध्यक्ष प्रशांत सिवन ने कहा कि कांग्रेस अपने आंतरिक मुद्दों से ध्यान हटाने के लिए इस तरह के मनगढ़ंत अभियान चला रही है। ये कुछ और नहीं बल्कि कांग्रेस द्वारा अपने आंतरिक मुद्दों को छिपाने के लिए जानबूझकर बनाए गए मनगढ़ंत अभियान हैं।

फाइल फोटो

केरल में दो चरणों में चुनाव

केरल में नगर निगमों, नगर पालिकाओं, ग्राम पंचायतों, ब्लॉक पंचायतों और जिला पंचायतों के प्रतिनिधियों के चुनाव के लिए दो चरणों में मतदान होगा। सात दक्षिणी और मध्य (तिरुवनंतपुरम, कोल्लम, अलप्पुझा, पथानामथिट्टा, इडुक्की और एर्नाकुलम) के मतदाता 9 दिसंबर को मतदान करेंगे।

भाजपा को किसी को भी नाम वापस लेने के लिए कहने की जरूरत नहीं : सिवन

भाजपा के मजबूत रुख पर प्रकाश डालते हुए, सिवन ने कहा, वार्ड 50 के उम्मीदवार के संबंध में, भाजपा को किसी को भी नाम वापस लेने के लिए कहने की बिल्कुल भी जरूरत नहीं है। पिछले चुनावों में, कांग्रेस और सीपीएम को उस वार्ड में कुल मिलाकर केवल लगभग 120 वोट मिले थे, जबकि भाजपा को 1,100 से ज्यादा वोट मिले थे। ऐसे में, भाजपा के पास कांग्रेस या सीपीएम उम्मीदवारों को नाम वापस लेने के लिए प्रभावित करने या दबाव डालने का कोई कारण नहीं है।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

साइकिल को बढ़ावा देने से दूर होगा प्रदूषण

साइकिल कभी आम आदमी की सवारी मानी जाती थी, लेकिन अब यह बड़ी-बड़ी गाडियों की चकाचौंध में गायब-सी हो गई है। इसके पीछे सरकार, सिस्टम और हमारी सोच तीनों जिम्मेदार हैं। इन सबके बीच अच्छी खबर यह भी है कि कोपेनहेगनाइज इंडेक्स-2025 ने भारत के अहमदाबाद शहर को दुनिया के टॉप 100 साइकिल-फ्रेंडली शहरों में शुमार किया है।

जिस तरह भारत के शहरों में वायु प्रदूषण बढ़ रहा है वह एक चिंता का विषय है। ऐसा माना जा रहा शहरों में बढ़ती गाड़िया इसके लिए बड़ा कारण है। अब विदेशों की तरह साइकिल को भी बढ़ावा देने की आवश्यकता है। सरकारों को चाहिए कि देश के शहरों में एक विशेष दिन पूरे शहर में गाड़ियों पर प्रतिबंध लगा कर सिर्फ साइकिल से चलने की प्रेरणा दी जाए। इसमें सरकार साइकिल उद्योग को बढ़ावा दे उन्हे और आम नागरिकों को छूट देकर साइकिल से चलने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। इससे जहां सेहत सही रहेगी वहीं पर्यावरण भी उम्दा रहेगा। साइकिल कभी आम आदमी की सवारी मानी जाती थी, लेकिन अब यह बड़ी-बड़ी गाडियों की चकाचौंध में गायब-सी हो गई है। इसके पीछे सरकार, सिस्टम और हमारी सोच तीनों जिम्मेदार हैं। इन सबके बीच अच्छी खबर यह भी है कि कोपेनहेगनाइज इंडेक्स-2025 ने भारत के अहमदाबाद शहर को दुनिया के टॉप 100 साइकिल-फ्रेंडली शहरों में शुमार किया है। अहमदाबाद इस मुकाम पर पहुंचा है तो देश के दूसरे शहर भी ऐसा क्यों नहीं कर सकते, सवाल यह भी है।

अहमदाबाद म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन ने साइकिलिंग को बढ़ावा देने के गंभीर प्रयास किए। माय बाइक और माय साइकिल जैसे पब्लिक बाइक शेयरिंग सिस्टम को मजबूत नेटवर्क दिया, साबरमती रिवर फ्रंट पर डेडिकेटेड साइकिल ट्रैक बनाए, पुराने शहर में भी संकरी गलियों को साइकिल-फ्रेंडली बनाया। जाहिर है, राजनीतिक इच्छाशक्ति मजबूत रही, फंडिंग लगातार मिली और सबसे बड़ी बात- क्रियान्वयन में कोई कोताही नहीं बरती गई। साइकिल अब वहां लोगों की स्मार्ट चॉइस बनती जा रही है। दूसरी तरफ कोलकाता, सूरत, जयपुर, कोटा, बेंगलूरु, चंडीगढ़ सबने बड़े प्लान बनाए, करोड़ों-अरबों रुपए पानी की तरह बहाए। लेकिन हुआ क्या? अनदेखी ने सब बेकार कर दिया। भारत में साइकिल को आम आदमी की गाड़ी ही समझा जाता रहा है, जबकि चीन और जापान में मंत्री, डॉक्टर, सीईओ सब साइकिल से दफ्तर जाते हैं। वहां साइकिल स्टेटस नहीं, स्मार्टनेस का प्रतीक है, लेकिन हम अभी भी स्टेटस सिंबल में फंसे हैं। भारत में साइकिल सवारी को लोकप्रिय करने के लिए क्या किया जा सकता है? जवाब स्पष्ट है, अगर राष्ट्रीय साइकिल नीति बनाई जाए और हेल्थ पालिसी में साइकिल को शामिल किया जाए तो लोग इसे अपना सकते हैं। हर शहर में डेडिकेटेड साइकिल हाईवे अनिवार्य हों। कार पार्किंग पर टैक्स लगे। साइकिल पार्किंग फ्री और सिक्योर हो। स्कूलों में साइकिल एजुकेशन अनिवार्य की जाए। इन प्रयासों से अगर देश में लोग साइकिल चलाना शुरू कर दें तो प्रदूषण भी कम हो सकता है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

लोकतंत्र के लिए ठीक नहीं है कमजोर विपक्ष

प्रभु चावला

लोकतंत्र का ध्वंस अचानक विस्फोट के साथ नहीं होता। जब लोकतांत्रिक व्यवस्था को चुनौती देने वाले लड़ने का तरीका भूल जाते हैं, तब यह खामोशी में टूटता है। बिहार के चुनावी नतीजे ने विपक्ष को सिर्फ एक राज्य से ही वंचित नहीं किया, इसने भारत को मजबूत लोकतंत्र से भी वंचित कर दिया है। विपक्षी गठबंधन ने बड़े वादे किये थे, पर वह असहमति और व्यक्तित्वों की आपसी लड़ाई में मात खा गया। बिहार में विपक्ष की हार एक राष्ट्रीय त्रासदी है ताकतवर भाजपा को चुनौती दे सकने वाला विश्वसनीय विपक्ष देश में नहीं है। यह खालीपन खतरनाक ढंग से गहराता जा रहा है। बिहार में विपक्ष की न कोई योजना थी, न चेहरा था, न कोई सामूहिक संदेश था। ऐसे में, अस्तित्व बचाने का संदेश बदलाव के संदेश पर भारी पड़ गया।

भाजपा को अपनी ताकत के बारे में बताने की जरूरत ही नहीं पड़ी। प्रधानमंत्री मोदी के चमत्कृत कर देने वाले संदेश और जीत की प्रतिबद्धता ने सब कुछ तय कर दिया था। यह आश्चर्यजनक है, क्योंकि बिहार वह राज्य है, जिसने आपातकाल के दौरान केंद्रीकृत ताकत को उलट देने का काम किया था। यह दुखद है कि विपक्ष ने अतीत से कोई सबक नहीं सीखा। अतीत में विपक्ष का प्रदर्शन प्रेस कॉन्फ्रेंसों और सोशल मीडिया पर नाराजगी पर नहीं, बल्कि दमन, जेल, त्याग और व्यक्तिगत आकांक्षाओं के बजाय बदलाव की इच्छा पर आधारित था। एक समय था, जब इंदिरा गांधी अजेय नजर आती थीं और उनकी ताकत ने कानूनी, राजनीतिक और नैतिक चुनौतियों को परास्त कर दिया था। तब विपक्ष किसी एक पार्टी से नहीं, बल्कि आंदोलन से उभरा। वृद्ध जयप्रकाश नारायण ने अपने नैतिक साहस के बल पर इतिहास में जगह बनायी। उन्होंने समाजवादियों, कम्युनिस्टों, परंपरावादी नेताओं, किसान संगठनों, श्रम संगठनों, छात्रों और क्षेत्रीय क्षत्रपों को एकजुट किया और एक राजनीतिक साम्राज्य को सत्ता से बाहर कर दिया। जेपी आंदोलन से जुड़ने वाले अपने राजनीतिक कद और छवि के लिए नहीं, भविष्य के लिए चिंतित थे। उस दौर से आज के विपक्षी नेताओं की तुलना कीजिए। इंडिया गठबंधन में वार्ता मिशन के लिए नहीं, अपनी सीटों के लिए हुई थी। उनके नेता राज्यों को क्षेत्रों की तरह विभाजित कर रहे थे, जैसे राष्ट्रीय राजनीति आपस में बांट लेने का कोई नक्शा हो। हार में भी वे अपने-अपने क्षेत्रों के प्रति चिंतित

दिखे। जब राजीव गांधी 1980 के दशक में इंदिरा गांधी की हत्या से उत्पन्न सहानुभूति लहर में अपार बहुमत से जीत सत्ता में आये थे, तब ऐसा लगता था कि कोई ताकत उन्हें चुनौती नहीं दे सकती। फिर भी वीपी सिंह ने विद्रोह किया और भ्रष्टाचार के खिलाफ अपनी प्रतिबद्धता से नायक बन कर उभरे। विद्रोह की उनकी रणनीति बंद कमरे में नहीं बनी थी। उन्होंने देवीलाल और मुलायम सिंह यादव को अपने साथ लिया था। उनके साथ किसान थे, जो राजमार्गों को ठप कर दे सकते थे और ऐसे समाजवादी संगठन थे, जो शहरों को अपने समर्थकों से भर दे सकते थे। तब तमिलनाडु में एम करुणानिधि, आंध्र प्रदेश में एनटी रामा राव और पश्चिम बंगाल में ज्योति बसु ने राष्ट्रीय स्तर पर अपना महत्व जताने की कोशिश नहीं की थी। वे सभी अपने राज्यों को सुरक्षित बनाये रखने के साथ-साथ भ्रष्टाचार के खिलाफ राष्ट्रीय आंदोलन में सहभागी होने के इच्छुक थे। आज राष्ट्रीय परिदृश्य में ऐसा कोई नेता नहीं दिखता। अब भारतीय राजनीति नेतृत्व के अकाल से गुजर रही है। आज नेतृत्व तो है, लेकिन उनमें गंभीरता नहीं है। नारे तो हैं, लेकिन उनमें जोश और जुनून नहीं है। वाम राजनीति के पतन से देश में वैचारिकता का बड़ा शून्य आया है। हरियाणा और पंजाब की राजनीति को परिभाषित करने वाले चौटाला और बादल परिवार आज गायब हैं या इतने कमजोर हो गये हैं कि पहचान में नहीं आते। ममता बनर्जी दिल्ली से तभी लड़ती हैं, जब कोलकाता को खतरा पैदा होता है। के चंद्रशेखर राव तेलंगाना के गौरव की बात करते तो हैं, पर उस सोच को व्यापक राष्ट्रीय लोकतांत्रिक परियोजना में बदलने में रुचि नहीं दिखाते। उत्तर प्रदेश की बात करने वाले अखिलेश यादव व्यापक राष्ट्रीय गठबंधन बनाने में हिचकते हैं। आम आदमी पार्टी साझा गठबंधन के साथ जाने को अनिच्छुक है। इस शून्य में अपना वर्चस्व बनाने में भाजपा को अधिक प्रयास नहीं करना पड़ता। इसका सांगठनिक तंत्र बिना किसी थकावट के आगे बढ़ता है। स्थिरता, राष्ट्रवाद, विकास और सुरक्षा के नारों के साथ इसके केंद्रीय चेहरे क्षेत्रीय नेताओं की तुलना में कहीं आगे दिखते हैं। ऐसे वर्चस्व के नतीजे गंभीर होते हैं। जब एक पार्टी सर्वशक्तिमान हो जाती है, तब संस्थाएं विकृत होती हैं। नौकरशाही झुक जाती है। जांच संस्थाएं चुनींदा लोगों को निशाना बनाती हैं। मीडिया पहुंच बनाने के बदले अपनी शक्ति का विस्तार करता है।

हरफनमौला धर्मेंद्र जो किसी पहचान में नहीं बंधे

हेमंत पाल

सिनेमा के हर अभिनेता को लंबे अरसे तक याद करने की वजह होती है। फिल्म इतिहास में अमिताभ बच्चन को यंग एंग्रीमैन के रूप में जाना जाता है, ऋषि कपूर की पहचान डांसिंग हीरो की थी, तो राजकुमार की पहचान उनके अलग ही तेवर वाले अंदाज के लिए रही। लेकिन, धर्मेंद्र जैसे अभिनेता के साथ ऐसी कोई पहचान नहीं जुड़ी। 'शोले' का वीरू मस्तमौला था तो 'सत्यवान' में उनका किरदार ईमानदार, नैतिक और संघर्षरत व्यक्ति का था। बंदिनी में वे संवेदनशील डॉक्टर की भूमिका में थे, तो 'चुपके-चुपके' में वे उस प्रोफेसर परिमल त्रिपाठी के रोल में थे, जिसने हल्की-फुल्की कॉमेडी से दर्शकों को गुदगुदाया। धर्मेंद्र के करिअर की विशिष्ट भूमिकाएं उनकी बहुमुखी प्रतिभा, नायकत्व और संवाद अदायगी के लिए जानी जाती हैं। उनके कुछ किरदार बॉलीवुड के सबसे यादगार और प्रभावशाली माने जाते हैं।

धर्मेंद्र ने एक्शन हीरो के तौर पर भी अपनी छवि बनाई। मेरा गांव मेरा देश, प्रतिज्ञा, जुगनू, समाधि, राजा जानी और 'हुकूमत' में साफ दिखाई दिया, जिससे वे 'ही मैन' कहे जाते रहे। हिंदी सिनेमा के सबसे लोकप्रिय और प्रभावशाली सितारों में धर्मेंद्र की गिनती होती रही है। उनका फिल्म करिअर छह दशकों से अधिक समय तक चला और उन्होंने 300 से अधिक फिल्मों में अभिनय किया। 1966 में 'फूल और पत्थर' से धर्मेंद्र को जबरदस्त लोकप्रियता मिली, इसके बाद वे 'एक्शन हीरो' और 'ही-मैन' के रूप में पहचाने गए। 1970 के दशक में वे सबसे ज्यादा कमाई करने वाले सितारों में शामिल थे और एक साल में ही 9 से 12 फिल्में रिलीज होने का रिकॉर्ड भी उनके नाम रहा था। 'शोले' (1975) में वीरू के किरदार ने उन्हें सबसे बड़ी पहचान दी। लेकिन, वे सिर्फ यहीं तक सीमित नहीं रहे। सत्यकाम, चुपके-चुपके, मेरा गांव मेरा देश, धरमवीर, सीता और गीता, द बर्निंग ट्रेन, हुकूमत, प्रतिज्ञा, नौकर बीवी का जैसी फिल्मों के लिए भी उन्हें हमेशा याद किया जाता रहेगा।

रोमांटिक, एक्शन, कॉमेडी और थ्रिलर समेत हर शैली की फिल्मों में उन्होंने सफलता पाई। लेकिन, ऋषिकेश मुखर्जी की फिल्मों ने उनके करिअर को नई ऊंचाई दी। 'सत्यकाम' और 'चुपके-चुपके' इसका बेहतरीन उदाहरण हैं। धर्मेंद्र सिनेमा के ऐसे सितारा रहे, जिन्होंने अभिनय, एक्शन, रोमांस और सामाजिक संदेश वाली फिल्मों के जरिए अपने चाहने वालों के दिलों पर गहरी छाप छोड़ी। उनके अभिनय की विरासत फिल्म इंडस्ट्री में हमेशा अमिट रहेगी। धर्मेंद्र ने कई फिल्मों में हास्य, जोश और भावुकता का अद्भुत मिश्रण पेश किया। दरअसल, उनकी ऐसी भूमिकाएं सिनेमा की सबसे प्रतिष्ठित भूमिकाओं में गिनी जाती हैं। 'फूल और पत्थर' के शाका में वे नेकदिल इंसान के रोल में दिखाई दिए तो 'अनुपमा' का राम रोमांटिक और संवेदनशील चरित्र था, जिसका चर्चित काव्यात्मक अंदाज दर्शक आज भी नहीं भूले।

धर्मेंद्र ऐसे अभिनेता रहे, जिन्होंने हर भूमिका, हर जॉनर में अपने अभिनय का जादू बिखेरा और हिंदी सिनेमा की परंपरा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। अपने अभिनय में उन्होंने एक्शन, रोमांस, कॉमेडी और ड्रामा हर भूमिका में बेजोड़ अदाकारी की और अपनी बहुमुखी प्रतिभा से दर्शकों को प्रभावित किया। उन्होंने 'फूल और पत्थर' और 'मेरा गांव मेरा देश' जैसी फिल्मों में सख्त और साहसी नायक का किरदार निभाया, वहीं 'चुपके चुपके' और 'प्रतिज्ञा' में हल्का-फुल्का रोल निभाया। इससे उनकी कॉमिक टाइमिंग सामने आई। 'शोले' में चुलबुले लेकिन निडर वीरू और 'अनुपमा' में विचारशील लेखक बनकर उन्होंने अपने अभिनय की गहराई को दर्शाया। 'हकीकत' जैसी फिल्म में युद्ध के दृश्यों और भावनाओं को, और 'लोफर' जैसी फिल्मों में रोमांटिक व कॉमिक किरदार को उन्होंने जीवंत बनाया। धर्मेंद्र अपने अभिनय काल में 'ही मैन' के नाम से मशहूर रहे हैं। उनके करिअर में 300 से अधिक फिल्में दर्ज हैं। उनके खाते में पद्मभूषण जैसे सम्मान के साथ कई यादगार ब्लॉकबस्टर फिल्में भी हैं। 1997 में फिल्मफेयर का लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड के साथ, हिंदी सिनेमा में योगदान के लिए उन्हें कई पुरस्कार मिले। उन्होंने हर दौर में अपनी छवि को बरकरार रखते हुए फिल्मों में सक्रियता बनाए रखी। चरस, शोले, राजपूत, कातिलों के कातिल और 'समधी' आदि इसी का प्रमाण है।

उनकी एक्टिंग स्टाइल में सहजता, इमोशन और दर्शकों से जुड़ने की क्षमता हमेशा कायम रही। उनकी अभिनय शैली में समय के साथ गहरी परिपक्वता और विविधता आई। शुरुआती दौर में वे रोमांटिक और संवेदनशील किरदारों के लिए पहचाने गए। वर्ष 1970 के दशक में एक्शन हीरो के रूप में उनका बोलबाला हुआ और बाद के सालों में उन्होंने भावनात्मक और चरित्र प्रधान भूमिकाएं की। धर्मेंद्र की छवि रोमांटिक हीरो और संवेदनशील पात्रों की भी रही। अनुपमा, बंदिनी और 'हकीकत' जैसी फिल्मों में उनके अभिनय में मासूमियत, सहजता और कोमलता प्रमुख रही। लेखकों तथा निर्देशकों के निर्देशन में उन्होंने साहित्यिक, दार्शनिक और आदर्शवादी किरदारों को गहराई से निभाया। लेकिन, उनका शुरुआती समय संघर्ष से भरा रहा। 8 दिसंबर, 1935 को पंजाब में जन्मे इस कलाकार के फिल्मी सफर की शुरुआत 1960 में अर्जुन हिंगोरानी की फिल्म 'दिल भी तेरा हम भी तेरे' से हुई थी। शुरू में उन्हें साधारण भूमिकाएं मिलीं, लेकिन जल्दी ही उनके अभिनय और व्यक्तित्व ने दर्शकों को आकर्षित करना शुरू कर दिया।

सेतुबंधासन

यह आसन फेफड़ों और छाती के क्षेत्र को खोलता है और सांस लेने की प्रक्रिया को आसान बनाता है। सेतुबंधासन के नियमित अभ्यास से ठंड से होने वाली सांस की समस्या और खांसी में राहत मिलती है। इसके अलावा सेतुबंधासन करने से कमर दर्द और जकड़न कम होती है। इस आसन को करने से पोश्चर में सुधार होने के साथ ही शरीर में लचीलापन बढ़ता है। सेतुबंधासन करने के लिए आपको मैट बिछाकर सीधा लेट जाना है। अब दोनों घुटनों को उपर की ओर उठाएं पंजों को सीधा रखें। इसके बाद आपको हाथों से पैरों के पंजों को पकड़ना है और गर्दन के नीचे के हिस्से को उपर की ओर लेकर जाना है। शरीर को उपर की ओर ले जाकर नीचे लाएं। उपर की ओर जाते समय आपको सांस लेनी और नीचे आते हुए सांस छोड़नी है। इस अभ्यास को करने के दौरान कम से कम इसके 30 सेट्स लगाएं।

भ्रामरी प्राणायाम

इससे मानसिक शांति के साथ-साथ सर्दी-खांसी से जुड़ी बेचैनी भी कम होती है। यह आसन नाक और गले की जकड़न में तुरंत राहत देता है।

अनुलोम-विलोम प्राणायाम

यह सबसे प्रभावी श्वास अभ्यास है जो फेफड़ों को शुद्ध करता है और ठंडी हवा से होने वाली जकड़न को कम करता है। इसके अभ्यास से कई लाभ मिलते हैं जैसे नाक बंद होना, साइनस, और कफ की समस्या में राहत मिलती है इसके अलावा इसके अभ्यास से संपूर्ण नाड़ियों की शुद्धि होती है जिससे वे पूर्ण स्वस्थ कांति में एवं वरिष्ठ बनता है।

सर्दी-जुकाम से राहत के लिए करें ये योगासन

सर्दियों के मौसम में जब तापमान गिरता है, तब सबसे पहले असर हमारे गले और फेफड़ों पर पड़ता है। बार-बार होने वाली खांसी और जुकाम शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता के कमजोर होने का संकेत हैं। दवाइयां अस्थायी राहत देती हैं, लेकिन योगासन शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को भीतर से मज़बूत बनाते हैं। योग न केवल सांस की नलियों को खोलता है, बल्कि शरीर में ऑक्सीजन का संचार बढ़ाकर फेफड़ों की क्षमता भी बढ़ाता है। अगर सर्दियों में आप नियमित रूप से कुछ खास योगासन करते हैं, तो खांसी-जुकाम जैसी समस्याओं से स्थायी राहत मिल सकती है।

कपालभाति

यह योगासन फेफड़ों से बलगम को निकालता है और श्वसन तंत्र को साफ रखता है। इसके अभ्यास से फेफड़ों की शक्ति और ऑक्सीजन लेवल बढ़ाता है। कपालभाती प्राणायाम करने के लिए सिद्धासन पद्मासन या वज्रासन में बैठकर सांसों को बाहर छोड़ने की क्रिया करें।सांसों को बाहर छोड़ने या फेंकते समय पेट को अंदर की तरफ धक्का देना है। ध्यान रखें कि सांस लेना नहीं है क्योंकि उक्त क्रिया में सांस अपने आप ही अंदर चली जाती है। कपालभाती प्राणायाम करते समय मूल आधार चक्र पर ध्यान केंद्रित करना होता है। इससे मूल आधार चक्र जाग्रत होकर कुंडलिनी शक्ति जागृत होने में मदद मिलती है। कपालभाती प्राणायाम करते समय ऐसा सोचना है कि हमारे शरीर के सारे नकारात्मक तत्व शरीर से बाहर जा रहे हैं। कपालभाति प्रणायाम की मदद से आप अपने शरीर से टॉक्सिन्स को बाहर निकाल सकते हैं।

अर्ध मत्स्येन्द्रासन

यह आसन शरीर की ऊर्जा को संतुलित करता है और इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाता है। शरीर में गर्मी बढ़ाकर संक्रमण से रक्षा करता है। इसके अलावा आपके शरीर की मांसपेशियों में लचीलापन लाता है और आपका ब्लड सर्कुलेशन ठीक होता है। अर्ध मत्स्येन्द्रासन को नियमित करने से आपके शरीर के विषैल तत्व बाहर होते हैं और शरीर डिटॉक्स होता है। इस आसन के नियमित अभ्यास से आप अपनी पाचन क्रिया को बेहतर बना सकते हैं।

हंसना मना है

पत्नी- हम कहां जा रहे हैं? पति- लॉन्ग ड्राइव पर.. पत्नी- तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? पति- मुझे भी अभी-अभी पता चला, जब ब्रेक फेल हो गए!

टीचर ने पूछा- क्लास में लड़ाई क्यों नहीं करनी चाहिए? छात्र- क्योंकि पता नहीं परीक्षा में किसके पीछे बैठना पड़ जाए। टीचर बेहोश...

सेल्समैन- सर कॉकरोच के लिए पाउडर लेंगे क्या? पप्पू- नहीं हम कॉकरोच को इतना लाड़-प्यार नहीं करते! आज पाउडर लगा देंगे तो कल हो सकता है परफ्यूम मांगे... सेल्समैन बेहोश...

कंजूस महिला दुकानदार से- ऐसा साबुन दो जो कम घिसे और नहाने के बाद चेहरे पे लाली लाए... दुकानदार नौकर से- मैडम को एक ईंट का टुकड़ा दे दो...!

लड़का लड़की होटल में गए... वेटर- मैम आप क्या लेंगी? लड़की- मिर्च वाला घेवर.. वेटर- क्या... लड़की- बोला न मिर्च वाला घेवर... वेटर (हैरानी से)- क्या... लड़का- अरे भाई गांव की है, तू टेंशन मत ले, पिज्जा मांग रही है!

कहानी | कद्दू की तीर्थयात्रा

हमारे यहां तीर्थ यात्रा का बहुत ही महत्व है। पहले के समय यात्रा में जाना बहुत कठिन था। पैदल या तो बैल गाड़ी में यात्रा की जाती थी। थोड़े थोड़े अंतर पे रुकना होता था। समाज का दर्शन होता था। विविध बोली और विविध रीति-रीवाज से परिचय होता था। कई कठिनाईओ से गुजरना पड़ता, कई अनुभव भी प्राप्त होते थे। एकबार तीर्थ यात्रा पे जानेवाले लोगो का संघ संत तुकाराम जी के पास जाकर उनके साथ चलने की प्रार्थना की। तुकारामजी ने अपनी असमर्थता बताई। उन्होंने तीर्थयात्रियो को एक कड़वा कद्दू देते हुए कहा-मै तो आप लोगो के साथ आ नहीं सकता लेकिन आप इस कद्दू को साथ ले जाईए और जहां - जहां भी स्नान करे, इसे भी पवित्र जल में स्नान करा लाये। लोगो ने उनके गूढार्थ पे गौर किये बिना ही वह कद्दू ले लिया और जहां-जहां गए, स्नान किया वहां-वहां स्नान करवाया, मंदिर में जाकर दर्शन किया तो उसे भी दर्शन करवाया। ऐसे यात्रा पूरी होते सब वापस आए और उन लोगो ने वह कद्दू संतजी को दिया। तुकारामजी ने सभी यात्रिओ को प्रीतिभोज पर आमंत्रित किया। तीर्थयात्रियो को विविध पकवान परोसे गए। तीर्थ में घूमकर आये हुए कद्दू की सब्जी विशेष रूपसे बनवायी गयी थी। सभी यात्रिओ ने खाना शुरू किया और सबने कहा कि यह सब्जी कड़वी है। तुकारामजी ने आश्चर्य बताते कहा कि यह तो उसी कद्दू से बनी है, जो तीर्थ स्नान कर आया है। बेशक यह तीर्थाटन के पूर्व कड़वा था, मगर तीर्थ दर्शन तथा स्नान के बाद भी इसी में कड़वाहट है ! यह सुन सभी यात्रिओ को बोध हो गया कि 'हमने तीर्थाटन किया है लेकिन अपने मन को एवं स्वभाव को सुधारा नहीं तो तीर्थयात्रा का अधिक मूल्य नहीं है। हम भी एक कड़वे कद्दू जैसे कड़वे रहकर वापस आये है।'

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

आय में वृद्धि तथा उन्नति मनोनुकूल रहेंगे। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। पार्टनरों का सहयोग समय पर प्राप्त होगा। यात्रा की योजना बनेगी। घर-बाहर कुछ तनाव रहेगा।

वृषभ

पार्टी व पिकनिक का कार्यक्रम बनेगा। स्वादिष्ट व्यंजनों का लाभ मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय मनोनुकूल रहेंगे। रचनात्मक कार्य सफल रहेंगे। काम में मन लगेगा।

मिथुन

वाणी पर नियंत्रण रखें। चिंता तथा तनाव रहेंगे। स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। व्यवसाय ठीक चलेगा। आय में निश्चितता रहेगी। लाभ होगा। कुसंगति से बचें।

कर्क

आत्मसम्मान बना रहेगा। बड़ा काम करने का मन बनेगा। परिवार के सदस्यों की उन्नति के समाचार मिलेंगे। उत्साहवर्धक सूचना प्राप्त होगी। प्रसन्नता रहेगी।

सिंह

मित्रों का सहयोग व मार्गदर्शन प्राप्त होगा। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। यात्रा की योजना बनेगी। प्रसन्नता रहेगी। घर-बाहर प्रसन्नतादायक वातावरण रहेगा।

कन्या

काम में लगन तथा उत्साह बने रहेंगे। मित्रों के साथ प्रसन्नतापूर्वक समय बीतेगा। यात्रा मनोनुकूल मनोरंजक तथा लाभप्रद रहेगी। भेंट व उपहार की प्राप्ति संभव है।

तुला

आय में निश्चितता रहेगी। मित्रों का सहयोग मिलेगा। जल्दबाजी न करें। स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। बनते कामों में विघ्न आएंगे। चिंता तथा तनाव रहेंगे।

वृश्चिक

व्यवसाय ठीक चलेगा। घर-बाहर प्रसन्नता बनी रहेगी। बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे। यात्रा मनोरंजक रहेगी। लाभ के अवसर हाथ आएंगे।

धनु

सामाजिक कार्य सफल रहेंगे। मान-सम्मान मिलेगा। कार्यसिद्धि होगी। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। घर-बाहर प्रसन्नता का माहौल रहेगा।

मकर

किसी राजनयिक का सहयोग मिल सकता है। लाभ के दरवाजे खुलेंगे। किसी जानकार प्रबुद्ध व्यक्ति का सहयोग प्राप्त होने के योग हैं। तंत्र-मंत्र में रुचि रहेगी।

कुम्भ

ऐश्वर्य के साधनों पर बड़ा खर्च होगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। चोट व दुर्घटना से बचें। आय में कमी रह सकती है। घर-बाहर असहयोग व अशांति का वातावरण रहेगा।

मीन

किसी वरिष्ठ व्यक्ति के सहयोग से कार्य की बाधा दूर होकर लाभ की स्थिति बनेगी। परिवार के लोग अनुकूल व्यवहार करेंगे। व्यवसाय ठीक चलेगा।

बॉलीवुड | मन की बात

मैंने कैंसर का डर, दर्द और फिर से बनने की प्रक्रिया को झेला : सोनाली

सोनाली बेंद्रे कैंसर सर्वाइवर हैं। उन्होने 2018 में इस खतरनाक बीमारी के खिलाफ जंग लड़ी। अभिनेत्री ने हाल ही में अपने एक सोशल मीडिया पोस्ट में दावा किया कि कैंसर से जंग में नेचुरोपैथ भी उनके लिए काफी मददगार साबित हुई। इसके बाद वे मेडिकल प्रोफेशनल्स के निशाने पर आ गईं। डॉक्टर साइरिएक एबी फिलिप्स ने उनकी कड़ी आलोचना की है। उन्होंने सोनाली की पोस्ट पर सवाल उठाते हुए कहा कि, आपका कैंसर कीमोथेरेपी, रेडिएशन और सर्जरी से ठीक हुआ, ना कि नेचुरोपैथी से। आलोचनाओं और सवाल के बाद सोनाली बेंद्रे ने चुप्पी तोड़ी है और सोशल मीडिया पर एक और पोस्ट शेयर किया है। सोनाली ने इंस्टाग्राम अकाउंट पर साझा किए गए एक पोस्ट में लिखा था, साल 2018 में जब मुझे कैंसर का पता चला तो मेरे नेचुरोपैथ ने मुझे ऑटोफैगी नाम की एक स्टडी के बारे में बताया। इसने मेरी रिकवरी में बहुत बड़ी भूमिका निभाई, इसलिए मैंने इसे पढ़ा, सीखा, प्रयोग किया और धीरे-धीरे इसे अपने रूटीन में शामिल कर लिया। मैं तब से इसे फॉलो कर रही हूं। सोनाली के इस सवाल पर डॉक्टर्स ने सवाल उठा दिए। डॉक्टर साइरिएक एबी फिलिप्स ने एक लंबा-चौड़ा पोस्ट शेयर कर किया। बता दें कि डॉक्टर साइरिएक एबी फिलिप्स भारतीय हेपेटोलॉजिस्ट हैं, जो सोशल मीडिया पर द लिवर डॉक के नाम से जाने जाते हैं। विरोध के बाद सोनाली ने अब एक अन्य पोस्ट शेयर किया है। इसमें उन्होंने अपनी बात रखते हुए कहा है, हम सभी का सहमत होना जरूरी नहीं है, लेकिन हमें एक-दूसरे को सिर्फ इसलिए खारिज करने से बचना चाहिए क्योंकि हम अलग-अलग तरीकों की तरफ झुकते हैं। सोनाली लिखती हैं, मैंने कभी डॉक्टर होने का दावा नहीं किया, लेकिन मैं पक्का कोई नीम-हकीम भी नहीं हूं। मैं एक कैंसर सर्वाइवर हूं, जिसने इस बीमारी से होने वाले डर, दर्द, अनिश्चितता और फिर से बनने की प्रक्रिया को झेला है।

भाभीजी घर पर हैं से अलग हुई शुभांगी अत्रे

बॉलीवुड | छोटा पर्दा

टी वी शो भाभीजी घर पर हैं के फैंस को तब झटका लगा था जब उनकी फेवरेट शिल्पा शिंदे ने शो छोड़ा था। इस रोल में शिल्पा को शुभांगी अत्रे ने रिप्लेस किया। लेकिन फैंस को दोबारा झटका इसलिए लगा है क्योंकि 10 साल बाद शुभांगी ने शो को अलविदा कह दिया है। उनके शो से जाने की वजह मेकर्स का वो फैसला बना है, जिसके तहत उन्होंने पुरानी अंगूरी भाभी यानी शिल्पा शिंदे को वापस लेने का फैसला किया है।

शुभांगी ने खुद शो छोड़ने की अटकलों को कंफर्म कर दिया है। पिछले हफ्ते उन्होंने अपना आखिरी एपिसोड शूट किया है। उनका कहना है वो ग्रैटिट्यूड के साथ अपनी इस जर्नी को खत्म कर रही हैं। टाइम्स ऑफ इंडिया को दिए इंटरव्यू में शुभांगी ने अपनी जर्नी और शिल्पा शिंदे की वापसी पर बात की।

उन्होंने कहा- मैंने प्रोड्यूसर मिसेज कोहली से हमेशा ये कहा था कि शो में मेरी जर्नी आन बान और शान के साथ शुरू होगी। ठीक वैसे ही मेरी जर्नी यहां पर खत्म हो रही है। इससे अच्छी एग्जिट की मैं कल्पना नहीं कर सकती थी। मुझे क्यों रिप्लेस किया जा रहा है, इसकी वजह में घुसने का मतलब नहीं है। मैं इसे ब्लेसिंग्स की तरह लेती हूं क्योंकि मैं एक आर्टिस्ट हूं। मैं नए कैरेक्टर्स को एक्सपलोर करना चाहती हूं। यहां से निकलकर फिर से काम की तलाश करनी है। जिंदगी में इतना कुछ देखने के बाद अब मैं फाइटर मोड में हूं। अभी मैं अपने काम और बेटी पर फोकस कर रही हूं।

शुभांगी ने कहा कि भाभीजी घर पर हैं शो में जर्नी खत्म होने को लेकर वो इमोशनल हैं। उनके लिए ये घर छोड़ने जैसा है। अंगूरी भाभी का रोल जैसे उनकी जिंदगी का हिस्सा बन चुका है। इस शो से शुभांगी को जो भी मिला है उसका वो शुक्रिया आदा करती हैं। 2016 से शुभांगी शो का हिस्सा रही हैं। वो कहती हैं कि किसी को रिप्लेस करना आसान नहीं होता, लोगों ने जिस तरह अंगूरी भाभी के रोल में उन्हें स्वीकारा, इसका वो आभार जताती हैं।

वैसे ये पहली बार नहीं था जब शुभांगी ने शिल्पा शिंदे को रिप्लेस किया था। शो चिड़ियाघर में भी शुभांगी ने शिल्पा की जगह ली थी। इस पर शुभांगी ने कहा- मैं इस रिप्लेसमेंट गेम को अब खत्म करती हूं। मैंने अपनी मां से कहा कि शिल्पा ने शो (भाभीजी घर पर हैं) को 9-10 महीने में छोड़ दिया था। ऐसा महसूस हुआ जैसे न्यूबॉर्न बेबी वो मुझे सौंपकर गई हों। अब वो बच्चा बड़ा होकर 10 साल का हो चुका है। मैं अब इसे वापस कर रही हूं।

लोगों को जिंदगी का पाठ पढ़ा गए धर्मेंद्र, अभिनेता का मैसेज सुन फैंस भावुक

बॉलीवुड के दिग्गज अभिनेता धर्मेंद्र अब इस दुनिया में नहीं हैं, लेकिन उनके जाने के बाद भी उनकी आवाज, उनकी सीख और उनका जिंदगी जीने का तरीका। सोशल मीडिया पर इन दिनों उनका जून में पोस्ट किया गया एक भावुक वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है। उस वीडियो में धर्मेंद्र जिंदगी, मोह-माया, बिछड़न और इंसानी फितरत के बारे में जो कहते हैं, उसे सुनकर अब लोग काभी भावुक हो रहे हैं।

धर्मेंद्र ने अपना यह वीडियो बेहद साधारण कैप्शन के साथ शेयर किया था- दोस्तों, हो सकता है आपको पसंद आए। लेकिन वीडियो को सुनकर अब फैंस कह रहे हैं- धरम जी ने मानो जाते-जाते जिंदगी का पूरा सार समझा दिया। वीडियो में धर्मेंद्र बेहद शांत स्वर में कहते हैं- जिंदगी चाहे जितनी बड़ी हो जाए, चाहे जितना कुछ मिल जाएज्लेकिन अंत में इंसान खाली हाथ ही जाता है। ये दुनिया, ये चीजें, ये जमा की हुई खुशियां। सब यहीं रह जाती हैं। फिर भी इंसान का स्वभाव है कि वह जोड़ता ही रहता है- पैसा, नाम, शोहरत, रिश्तेज्लेकिन आखिर में, साथ कुछ नहीं जाता—सिवाय प्यार और अच्छेपन के।

अक्सर दिखता था शायराना अंदाज

बता दें धर्मेंद्र अक्सर अपने फैंस के साथ ऐसे ही कई वीडियोड साझा करते थे जिनमें जिंदगी के अलग-अलग पहलुओं पर बात की जाती थी। वो लोगों को अपनी ओर से जिंदगी के मायने सिखाते रहते थे।

धर्मेंद्र का अंतिम संस्कार

अभिनेता धर्मेंद्र का अंतिम संस्कार सोमवार को विले पार्ले स्थित पवन हंस श्मशान भूमि में किया गया। एक एंबुलेंस धर्मेंद्र के घर के बाहर देखी गई, जिसके बाद इंडस्ट्री में हलचल मच गई। धर्मेंद्र की बेटी एशा देओल, पत्नी हेमा मालिनी सहित कई सितारों को श्मशान घाट के बाहर देखा गया तो धड़कनें और तेज हुईं। कुछ ही देर में वह खबर सामने आई, जिसे कोई सुनना नहीं चाहता था। एक्टर धर्मेंद्र ने दुनिया को अलविदा कह दिया। उनका अंतिम संस्कार हो चुका है। मगर, फैंस के दिल में टीस है कि ही-मैन को आखिरी बार नहीं देख पाए।

अजब-गजब | इस देश में पाले गए हैं 19 करोड़ मच्छर

दुनिया का इकलौता देश, जहां पर है मच्छरों की फैक्टरी

विज्ञान और प्रकृति का संघर्ष हमेशा से चलता रहा है। लेकिन कभी-कभी इस संघर्ष में जीत हासिल करने के लिए वैज्ञानिक ऐसे रास्ते चुनते हैं जो आम लोगों के लिए किसी फंतासी कहानी से कम नहीं होते हैं। जब पूरी दुनिया मच्छरों को खत्म करने या उनसे बचने के तरीके खोज रही है, तब एक देश मच्छरों को बड़ी संख्या में पालने की एक विशाल परियोजना पर काम कर रहा है। यह विचार न केवल चौंकाने वाला है, बल्कि यह सवाल भी पैदा करता है कि क्या यह मानव स्वास्थ्य के लिए एक नया जैविक खतरा बन सकता है या यह वास्तव में डेंगू जैसी जानलेवा बीमारी के खात्मे का अप्रत्याशित समाधान है? क्या आप उस देश का नाम जानते हैं, जहां पर इन मच्छरों के लिए फैक्ट्री है? बहुत कम लोगों को ही इस बारे में पता होगा। वैसे बता दें कि इस पहल के तहत प्रति सप्ताह 19 करोड़ मच्छर जिस देश में पैदा किए जा रहे हैं, उसका नाम ब्राजील है।

ब्राजील ने हाल ही में अपने साओ पाउलो राज्य के कैम्पिनास में यह विशाल मच्छर फैक्ट्री खोली है। यह सुविधा 1,300 वर्ग मीटर में फैली हुई है और 'वर्ल्ड मॉस्किटो प्रोग्राम' (ड्रक्स्क) के तहत संचालित हो रही है। यह फैक्ट्री हर सप्ताह 190 मिलियन (19 करोड़) एडीज एजिप्टी मच्छरों का उत्पादन कर सकती है। यह संख्या इतनी बड़ी है कि यह एक वर्ष के लिए 10 करोड़ लोगों की आबादी को कवर करने के लिए पर्याप्त मानी जा रही है। लेकिन जेहन में

सवाल यह उठता है कि एक तरफ जहां हम मच्छरों से परेशान हैं, वहीं दूसरी ओर कोई देश इन मच्छरों को पालने के लिए फैक्ट्री बना रहा है, लेकिन क्यों? दरअसल, इस विशालकाय परियोजना की आवश्यकता इसलिए पड़ी, क्योंकि 2024 में इस देश ने अपने इतिहास में सबसे बुरे डेंगू प्रकोप का सामना किया, जो दुनिया भर में रिपोर्ट किए गए कुल संक्रमणों के 80त्न से अधिक के लिए जिम्मेदार था।

इस फैक्ट्री में मच्छरों को पालने की वजह डेंगू का पूरी तरह से खात्मा करना है। ब्राजील में साल 2024 में डेंगू के ढेर सारे मामले सामने आए थे, जिसमें से कई लोगों की मौत भी हुई थी। ऐसे में ब्राजील इन मच्छरों से निपटने के लिए अनोखे तरकीब का इस्तेमाल कर रहा है। इस फैक्ट्री में मच्छरों को पालने के पीछे का रहस्य उनकी जैविक संरचना में बदलाव करना है, जिसके लिए 'वोल्बाचिया विधि' का उपयोग किया जा रहा है। फैक्ट्री में पाले जाने वाले मच्छरों को विकास के दौरान 'वोल्बाचिया' नामक एक प्राकृतिक बैक्टीरिया से संक्रमित किया जाता है। यह बैक्टीरिया मच्छरों के लिए हानिकारक नहीं होता, लेकिन यह उनके शरीर में डेंगू वायरस को विकसित होने से रोक देता है। इस तरह ये मच्छर मानव को काटने पर भी वायरस नहीं फैला सकते हैं। इस प्रक्रिया का अंतिम चरण मच्छरों को जंगल में रिलीज करना है। जब वोल्बाचिया-संक्रमित मच्छर जंगल के मच्छरों के साथ प्रजनन करते हैं, तो यह सुरक्षात्मक बैक्टीरिया उनकी संतानों में भी फैल जाता है। इस तरह धीरे-धीरे जंगल में मच्छरों की पूरी आबादी वोल्बाचिया से संक्रमित हो जाती है, ऐसे में वे डेंगू फैलाने में अक्षम हो जाते हैं, जिससे संक्रमण की दर स्थायी रूप से कम हो जाती है। बता दें कि फैक्ट्री के अंदर मच्छरों के लार्वा को नियंत्रित तापमान पर विकसित किया जाता है। परिपक्व होने पर उन्हें पिंजरों में रखा जाता है, जहां नर मच्छरों को शर्करा युक्त घोल और मादा मच्छरों को मानव त्वचा की नकल करने वाली थैलियों में जानवरों का रक्त परोसा जाता है। मच्छर लगभग चार सप्ताह यहां बिताते हैं, जिसके बाद उनके अंडों को एकत्र किया जाता है और उन्हें जंगल में छोड़े जाने के लिए तैयार किया जाता है। वोल्बाचिया पद्धति पहले भी इंडोनेशिया और कोलंबिया में सफल रही है, जहां इसने डेंगू संक्रमण को 70प्रतिशत तक कम करने में मदद की है।

जब अचानक जेल से गायब होने लगीं छिपकलियां, टेंशन में आ गया जेलर

ड्रग्स के मामले में पहले से ही बदनाम पंजाब की जेलों से अब एक ऐसी खबर सामने आई है, जिसे सुनकर आप दंग रह जाएंगे। यहां कैदी ड्रग्स की कमी के चलते छिपकली की पूंछ को ही अपना नया 'नशा' बना बैठे हैं। जी हां, छिपकली पकड़ो, पूंछ काटो, सुखाकर पाउडर बनाओ और तंबाकू या बीड़ी में मिलाकर कश लगा लो। बस, 'इंस्टेंट नशा' मिल जाता है! इस अजीबोगरीब ट्रेंड की भनक लगते ही जेल प्रशासन हड़बड़ा गया है। अब जेल की दीवारों से एक-एक छिपकली हटा ली गई है, ताकि कैदी इस 'जैविक ड्रग' का शिकार ना बनें। ये खबर सोशल मीडिया पर तहलका मचाए हुए है। कई पोस्ट्स में दावा किया गया है कि पंजाब की जेलों में कैदी इसी तरह नशा कर रहे हैं। लेकिन क्या ये सिर्फ अफवाह है? नहीं, मेडिकल और क्रिमिनोलॉजी के केस स्टडीज इसे साबित करती है। जेलों में ड्रग्स स्मगलिंग रोकने के सख्त इंतजामों के बावजूद, कैदी कभी-कभी नशे के लिए वैकल्पिक रास्ते तलाश लेते हैं। पंजाब की जेलों में 42प्रतिशत कैदी ड्रग एडिक्ट्स हैं। ये आंकड़ा 2023 के एक सरकारी सर्वे से आया है। जब चरस, हेरोइन या स्पिरिट जैसी चीजें ना मिलें, तो कैदी जेल के आसपास मिलने वाली छिपकली (खासकर इंडियन स्पाइनी-टेल्ड लिजर्ड या वॉल लिजर्ड) को टारगेट बनाते हैं। एक 25 साल के कैदी का केस सबसे चर्चित है, जो 2014 में पंजाब के पटियाला के राजिंदरा हॉस्पिटल में एडमिट हुआ था। ये कैदी 15 साल से कैनबिस का आदी था। जेल में ड्रग्स ना मिलने पर साथी कैदियों ने उसे छिपकली का 'ट्रिक' सिखाया। वो छिपकली को पकड़कर जला देते, उसकी राख को बीड़ी में भरकर सुलगाते थे। कैदी का दावा था कि ये कैनबिस जितना ही मजा देता है, और तुरंत ही नशा छा जाता है। मेडिकल रिपोर्ट्स में पाया गया कि इसमें कोई स्पेसिफिक ड्रग कंपाउंड नहीं होता है लेकिन ये साइकोएक्टिव इफेक्ट पैदा करता है, यानी कॉन्फिडेंस बढ़ना, हल्की सुन्नता या हेलुसिनेशन। एक और केस 2013 का सामने आया था। रोहतक के PGIMS में एक अल्कोहल और कैनबिनॉइड एडिक्ट कैदी ने जेल में छिपकली की पूंछ सुखाकर पाउडर बनाया और दवा में मिलाकर खा लिया। इसके बाद 10-12 घंटे तक उसे नशा छाया रहा। डॉक्टरों ने इसे 'अनकन्वेंशनल साइकोएक्टिव सब्सटेंस' बताया।

प्रजापोल एनालिटिक्स के चुनावी सर्वे के नतीजे सबसे सटीक

बिहार विस चुनाव में पहले ही बताया था एनडीए को मिलेंगी 186 से ज्यादा सीटें

» बेहतरीन टीम के साथ ग्राउंड पर करते हैं काम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। बिहार के चुनावी संग्राम में प्रजापोल एनालिटिक्स के चुनावी सर्वे के नतीजे सबसे सटीक साबित हुए हैं। इस चुनावी सर्वे एजेंसी ने एनडीए को 186 से ज्यादा सीटें आने की भविष्यवाणी की थी। जो वास्तविक नतीजों के सबसे करीब है। जबकि महागठबंधन को 50 सीटें बताई थीं। यही नहीं उन्होंने हर सीट पर प्रमुख दलों के प्रत्याशियों को मिलने वाले वोट भी बताए थे। प्रजापोल एनालिटिक्स संस्था ने इस सर्वे के जरिये तीन महीने में जनता की नब्ज पकड़ने का काम किया। इसकी टीम लगभग सभी विधानसभा क्षेत्रों में सर्वे करने गई। वहां उसने लोगों से बात की। सर्वे के दौरान जब टीम को लगा पूरे इलाके में एक जैसी राय आ रही है तो उसने वहां के बाकी हिस्से को छोड़कर दूसरे विधानसभा क्षेत्र में अपना फोकस किया।

प्रजापोल संस्था की स्थापना मई 2025 मेंकी गई। इसके संस्थापक के. राम मोहन राव,आईएएस (सेवाननवृत्त) और के. नवजय हैं। यह एजेंसी जनमत सवेक्षण (ओनपननयन पोल)और चुनाव प्रबंधन में नवशेषज्ञता रखती है। इस एजेंसी की स्थापना से पहले यही कायय हम दूसरी एजेंसी के नाम से करते थे,जिसका नाम सोसाइटी फ़ॉर ग्लोबल एनलाइटनमेंट एं ड डेवलपमेंट, लखनऊ था। हम जनता से प्रश्न पूछते हैं और क्षेत्र के बारे में जानकारी लेते हैं। एक निवायचन क्षेत्र के लिए 5000-20000 लोगों से मुलाकात करनी पड़ती है। जब हमें रुझान मिलने लगे तो हम कम सैंपल पर ही रोक देते हैं। जब रुझान न मिले तो सैंपल बढ़ाते रहते हैं, जब तक स्पि बढ़त न मिल जाए। हमारी विशेषज्ञता यह है कि हम विधानसभा स्तर पर बता सकते हैं कि कौन जीतेगा और कितने अंतर से जीतेगा, तथा रनर-अप उम्मीदवार को कितने वोट नमलेंगे। गांव-वार भी किस उम्मीदवार को कितना समर्थन है, यह हम बताएंगे, जिससे आप अपनी रणनीति बना सकते हैं। हम चुनाव से 2 साल पहले भी बता सकते हैं कि कौन-सी पाटी जीतेगी, जनता का क्या मूड है और जीतने के नलए क्या रणनीनि हो सकती है।

सही हुई साबित पीपीए की 95 प्रतिशत भविष्यवाणी

इससे पहले 2017 में उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव का सवेक्षण किया गया, जिसमें 95प्रतिशत भविष्यवाणी सही साबित हुईं। पहली बार भारत में किसी एजेंसी ने सीट-वार यह बताया कि किस विधानसभा क्षेत्र से कौन-सा उम्मीदवार जीतेगा और कितने वोटों के अंतर से जीतेगा। इसके बाद पूरे देश मेंइसी प्रकार के सर्वे का चलन शुरू हो गया। हमारी एजेंसी ने अकेले भनवष्यवाणी की थी नक बीजेपी को लगभग 300 सीटें मिलेंगी। 2024 मेंआंध्र प्रदेश चुनाव का सर्व किया गया। हमने टीडीपी के लिए 139 10 सीटों (लगभग 149) का अनुमान लगाया था, जबकि उन्हें लगभग 160 सीटें मिलीं। सफलता दर लगभग 95प्रतिशतज रही।

पूर्व आईएएस अधिकारी रामा मोहन राव हैं सहसंस्थापक

प्रजापोल एनालटिक्स संस्था के पार्टनर व सहसंस्थापक के रामा मोहन राव पूर्व आईएएस अधिकारी रहे हैं। उन्होंने को मतगणना में नतीजे आने के बाद अपने सर्वे पर संतोष जाहिर किया। के रामा मोहन राव ने कहा, हम यही देखा है गपबाजी से जनता को मूर्ख नहीं बनाया जा सकता। अब पहले जैसी बात नहीं रही।

पीपीए का यह था आकलन

एनडीए-186	कांग्रेस-5
भाजपा-91	वीआईपी-1
जनता दल यू-68	सीपीआई-0
एजेपी (आर)-16	सीपीआई एम-1
आरएलएम-5	सीपीआई एमएल-4
एचएएमएस-6	आरजेडी-39
महागठबंधन-50	एआईएमआईएम-5
	अन्य-2

वैज्ञानिक तरीके से होता है सर्वे

15 लोगों की कोर टीम के साथ 100 कर्मचारी

हमारी फील्ड टीम और तकनीकी टीम अच्छी तरह प्रशिक्षित और सक्षम है, और हमारा पिछला रिकॉर्ड इसकी पुष्टि करता है। हमारे पास 15 लोगों की कोर टीम है, और फील्ड स्तर पर 100 लोग की टीम कार्यरत है। ज़रूरत पड़ने पर हम और कर्मचारियों की नियुक्ति करते हैं।

टी20 विश्व कप की सात फरवरी से होगी शुरुआत

» भारत-पाक एक ही ग्रूप में दोनों के बीच कोलंबो में 15 फरवरी को होगा मैच

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। अगले साल होने वाले आईसीसी टी20 विश्व कप का कार्यक्रम घोषित हो गया है। 20 टीमों के बीच खेले जाने वाले इस वैश्विक टूर्नामेंट की मेजबानी भारत और श्रीलंका करेंगे। भारत इस टूर्नामेंट में खिताब बचाने के इरादे से उतरेगा। भारत ने 2024 में रोहित शर्मा की कप्तानी में दक्षिण अफ्रीका को हराकर ट्रॉफी अपने नाम की थी। इससे पहले टीम इंडिया ने 2007 में टूर्नामेंट के पहले संस्करण में पाकिस्तान को हराया था। यह इस टूर्नामेंट का 10वां संस्करण है। टी20 विश्वकप की शुरुआत सात फरवरी से होगी। भारत और पाकिस्तान की टीमें एक ही ग्रूप में शामिल हैं। इस ग्रूप में अमेरिका, नीदरलैंड्स और नामीबिया की टीम है।

भारत और पाकिस्तान के बीच 15 फरवरी को टूर्नामेंट का महामुकाबला कोलंबो को आर प्रेमादासा स्टेडियम में खेला जाएगा। भारत ग्रूप चरण में अपना आखिरी मैच अहमदाबाद में 18 फरवरी को खेलेगा। आईसीसी अध्यक्ष जय शाह ने बताया कि मुकाबले भारत और श्रीलंका के आठ स्थलों पर आयोजित होंगे। भारत में कुल पांच स्थानों पर मैच खेलें जाएंगे, जबकि श्रीलंका के तीन स्थलों पर इस टूर्नामेंट के मैच आयोजित होंगे। भारत में दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता और अहमदाबाद इस टूर्नामेंट के मैचों की मेजबानी करेंगे। वहीं, कोलंबो का आर प्रेमादासा और एस स्पोर्ट्स क्लब में मैच होंगे, जबकि कैंडी का पल्लेकेले इंटरनेशनल स्टेडियम भी मैच की मेजबानी करेगा। पिछले बार की तरह सभी टीमों को चार ग्रूप में बांटा गया है, प्रत्येक ग्रूप में पांच टीमें शामिल हैं। ग्रूप चरण के बाद सुपर आठ चरण होगा। प्रत्येक ग्रूप से शीर्ष दो टीमें इस चरण के लिए क्वालिफाई करेंगी। अगर पाकिस्तान फाइनल में पहुंची तो खिताबी मुकाबला कोलंबो में होगा। पाकिस्तान के नहीं पहुंचने पर फाइनल मुकाबला अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेला जाएगा। ग्रूप चरण का अंतिम मैच छोड़कर बाकी हर दिन तीन-तीन मुकाबले खेले जाएंगे।

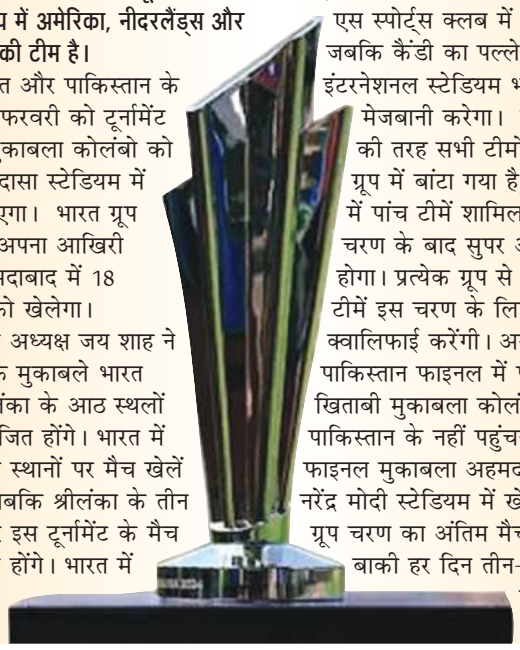

रोहित बने टूर्नामेंट के ब्रांड दूत

पूर्व भारतीय कप्तान रोहित शर्मा को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने मंगलवार को बड़ी जिम्मेदारी सौंपी। आईसीसी अध्यक्ष जय शाह ने बताया कि रोहित शर्मा भारत और श्रीलंका की मेजबानी में होने वाले टी20 विश्व कप के ब्रांड दूत बनाए गए हैं। जय शाह ने कहा कि 2024 टी20 विश्व कप के विजेता कप्तान और अब तक सभी नौ संस्करणों में खेलने वाले खिलाड़ी से बेहतर इस आयोजन का कोई प्रतिनिधि नहीं हो सकता।

‘रोजगार दो, सामाजिक न्याय दो’ से पूरे यूपी को मथेगी आप

» आप सांसद संजय सिंह बोले- रोजगार और सामाजिक न्याय यात्रा से खोलेंगे भाजपा की पोल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। आम आदमी पार्टी के ‘रोजगार दो, सामाजिक न्याय दो’ यात्रा में भीड़ जुटने का सिलसिला अभी जारी है। उत्तर प्रदेश में होने वाले पंचायत व विधानसभा चुनाव के मद्देनजर आम आदमी पार्टी (आप) सांसद व पार्टी प्रभारी संजय सिंह ‘रोजगार दो, सामाजिक न्याय दो’ यात्रा से पूरा प्रदेश मथ रहे हैं। अयोध्या से प्रयागराज हुई पदयात्रा इसकी शुरुआत थी। अब यह पदयात्रा पूरे यूपी में आठ चरणों में होगी।

वोटरों के काटे जा रहे नाम

संजय ने कहा कि यात्रा का पहला चरण 25 से 29 दिसंबर तक रामपुर, मुरादाबाद और अमरोहा जिलों में होगा। जो लोग पिछली यात्रा में शामिल नहीं हो पाए, वे इस यात्रा से जुड़ें और मिस कॉल नंबर 75000 40004 पर अपना पंजीकरण कराएं। उन्होंने कहा कि एसआईआर में यूपी में लाखों वोटरों के नाम लिस्ट से काटे जा रहे हैं। एक ही विधानसभा में 50-60 हजार वोट काटे जा रहे हैं। यहां तक कि सेवानिवृत्त आईएएस विद्यासागर और उनकी पत्नी का नाम भी काट दिया गया। बिहार में 80 लाख नाम हटाए गए। उन्होंने कहा कि मुख्य चुनाव आयुक्त भाजपा सरकार के एजेंडा को पूरा करने में इतनी तेजी दिखा रहे हैं कि सरकारी कर्मचारी आत्महत्या तक करने लगे हैं।

एसआईआर देश का सबसे बड़ा चुनावी घोटाला

उन्होंने एसआईआर को देश का सबसे बड़ा चुनावी घोटाला करार दिया। पार्टी संसद के शीतकालीन सत्र में पार्टी इसे जोरशोर से उठाएगी। उन्होंने कहा कि यूपी और कई राज्यों में एसआईआर के नाम पर 17 बीएलओ की जान जा चुकी है। 563 लोगों को नोटिस भेजे गए, 181 आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की नौकरी खत्म कर दी गई। जब चुनाव डेढ़ साल बाद होने हैं तो सरकार को एक ही महीने में पूरा एसआईआर क्यों चाहिए? क्या यह चुनाव सुधार है या विपक्ष और वंचित समाज को वोटर लिस्ट से साफ करने की साजिश?

गवर्नर का पद स्वीकार नहीं करूंगा : गवई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया के पद से अब जस्टिस बीआर गवई रिटायर हो गए हैं। नए सीजेआई सूर्यकांत पद संभाल चुके हैं। इस मौके पर जस्टिस गवई ने सुप्रीम कोर्ट में अपनी यात्रा पर खुलकर बात की। उन्होंने रिटायरमेंट के बाद राजनीति में आने की अटकलों पर भी खुलकर जवाब दिया। सुप्रीम कोर्ट में चीफ जस्टिस रहते हुए जस्टिस गवई 330 ज्यादा फैसलों में शामिल रहे हैं।

जब उनसे पूछा गया कि आपने कहा था कि आप रिटायरमेंट के बाद जॉब नहीं लेंगे तो क्या इस बात की संभावनाएं हैं कि आप राजनीति में आ सकते हैं? इस पर उन्होंने कहा कि फिलहाल मैंने इसके बारे में नहीं सोचा है, मैं बस अभी शांति में हूं, मैंने अभी कुछ नहीं करने का फैसला किया है और यहीं मानता हूं कि आपको आज के हिसाब से जीना चाहिए।

कर्नाटक कांग्रेस विधायक दिल्ली से लौटे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

» कहा- मुख्यमंत्री पर फैसला आलाकमान करेगा

नई दिल्ली। कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डी के शिवकुमार को मुख्यमंत्री बनाने के वास्ते दबाव बनाने के लिए पार्टी नेताओं से मिलने नयी दिल्ली गए कांग्रेस के कुछ विधायकों ने यहां कहा कि नेतृत्व इस मामले पर फैसला लेगा। कुछ विधायकों ने कहा कि उन्होंने आलाकमान से मुख्यमंत्री के मुद्दे पर भ्रमजल्द से जल्द खत्म करने का अनुरोध किया है, जबकि अन्य ने कहा कि वे प्रस्तावित मंत्रिमंडल फेरबदल के दौरान युवाओं या नये चेहरों को मौका देने की मांग कर रहे हैं।

राज्य में मुख्यमंत्री बदलने की अटकलों के बीच सत्तारूढ़ पार्टी के भीतर शक्ति संघर्ष तेज हो गया है। 20 नवंबर को कांग्रेस सरकार के अपने पांच वर्षीय कार्यकाल के ढाई साल पूरा होने के बाद यह चर्चा और तेज हो गई है, क्योंकि 2023 में मुख्यमंत्री सिद्धरमैया और शिवकुमार के बीच कथित ‘सत्ता साझेदारी’ समझौते का दावा किया जा रहा है। सिद्धरमैया ने हाल ही में कहा था कि वह पूरे पांच साल के कार्यकाल के लिए मुख्यमंत्री बने रहेंगे और भविष्य में राज्य का बजट पेश करना जारी रखेंगे। मगदी से विधायक एच. सी. बालकृष्ण ने कहा कि अगले मुख्यमंत्री का फैसला आलाकमान पर निर्भर है, लेकिन उन्होंने उनसे मौजूदा भ्रम को दूर करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा, हम भ्रम दूर करने के लिए आलाकमान से बात करने गए थे क्योंकि अंतिम फैसला जरूरी है। कौन मुख्यमंत्री बनेगा, यह महत्वपूर्ण नहीं है, मौजूदा स्थिति कांग्रेस पार्टी के लिए नुकसानदेह है। आलाकमान को हस्तक्षेप करके इस मामले को सुलझाना चाहिए।

संविधान दिवस के बहाने पक्ष विपक्ष में वार पलटवार

» कांग्रेस ने संघ व भाजपा पर किया प्रहार, विपक्ष के निशाने पर आए मोदी-शाह

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। संविधान दिवस के बहाने पक्ष में विपक्ष में वार पलटवार प्रारंभ हो गया है। कांग्रेस ने भाजपा, मोदी व संघ पर करारा वार किया है। कांग्रेस सांसद इमरान मसूद ने बुधवार को कहा कि संविधान दिवस पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की टिप्पणी महत्वपूर्ण है, लेकिन उन्हें आने वाली पीढ़ियों की बेहतरी के लिए इसके सही अर्थ को समझना होगा। कांग्रेस नेता की यह टिप्पणी ऐसे समय में आई है जब प्रधानमंत्री मोदी ने संविधान दिवस पर एक खुला पत्र लिखा है, जिसमें उन्होंने लोगों से अपने कार्यों के माध्यम से संवैधानिक मूल्यों को मजबूत करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराने का आह्वान किया है।

मसूद ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी जो कह रहे हैं वह बिल्कुल सही है और महत्वपूर्ण है। लेकिन अगर वह खुद इसे समझें और भविष्य के लिए भी ऐसा ही रास्ता अपनाएँ, इस संविधान का उल्लंघन न करें और इस लोकतांत्रिक प्रक्रिया को नष्ट न करें, तो यह आने वाली पीढ़ियों के लिए बहुत बेहतर होगा। संविधान दिवस प्रतिवर्ष 26 नवंबर को 1949 में संविधान को अपनाने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। इससे पहले, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को संविधान दिवस के अवसर पर नागरिकों को एक पत्र लिखा, जिसमें संवैधानिक कर्तव्यों पर अधिक ध्यान केंद्रित करने और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में व्यापक भागीदारी का आह्वान किया गया। अपने संदेश में, प्रधानमंत्री ने डॉ. राजेंद्र प्रसाद की अध्यक्षता वाली संविधान सभा और डॉ. बी.आर. अंबेडकर के नेतृत्व वाली प्रारूप समिति के कार्यों को याद किया।

संविधान सुरक्षित है तो हर भारतीय के अधिकार सुरक्षित हैं : राहुल गांधी

लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने बुधवार को संविधान दिवस पर जनता को शुभकामनाएं दीं और समानता और न्याय के सिद्धांतों का जिक्र किया। एक पोस्ट में, राहुल गांधी ने कहा कि संविधान सिर्फ एक किताब नहीं, बल्कि देश के नागरिकों से किया गया एक पवित्र वादा है। इसके अलावा, उन्होंने भारत के लोगों से संविधान पर किसी भी हमले को न होने देने का संकल्प लेने को कहा। गांधी ने पोस्ट में लिखा कि भारत का संविधान सिर्फ़ एक किताब नहीं है यह देश के प्रत्येक नागरिक से किया गया एक पवित्र वादा है। एक वादा कि चाहे कोई किसी भी धर्म या जाति का हो, किसी भी क्षेत्र से आता हो, कोई भी भाषा बोलता हो, गरीब हो या अमीर, उसे समानता, सम्मान और न्याय मिलेगा। संविधान गरीबों और वंचितों के लिए एक सुरक्षा कवच है; यह उनकी ताकत है, और यह हर नागरिक की आवाज़ है। कांग्रेस नेता ने आगे कहा कि जब तक संविधान सुरक्षित है, हर भारतीय के अधिकार सुरक्षित हैं। आइए हम संकल्प लें कि हम संविधान पर किसी भी तरह का हमला नहीं होने देंगे। इसकी रक्षा करना मेरा कर्तव्य है और इस पर होने वाले हर हमले के खिलाफ मैं सबसे पहले खड़ा रहूँगा। संविधान दिवस की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ। जय हिंद, जय संविधान।

संविधान आज टुकड़े-टुकड़े हो रहा है : उदित राज

इस बीच, कांग्रेस नेता उदित राज ने सत्तारूढ़ शासन पर हमला करते हुए आरोप लगाया कि संविधान आज टुकड़े-टुकड़े हो रहा है। उन्होंने कहा, हम संविधान पर हमला नहीं होने देंगे। यह याद रखना चाहिए कि आज संविधान के टुकड़े-टुकड़े हो रहे हैं। 26/11 के मुंबई आतंकवादी हमले का जिक्र करते हुए राज ने कहा, आतंकवादी हमले कभी भी हो सकते हैं और संविधान विरोधी तत्व हमला करने से पहले संविधान दिवस नहीं देखते। वह भी संविधान पर हमला था। मैं शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संविधान दिवस के अवसर पर देशवासियों को पत्र लिखा है। उन्होंने 1949 में संविधान के ऐतिहासिक अंगीकरण का स्मरण करते हुए इसकी राष्ट्र की प्रगति में मार्गदर्शक भूमिका को रेखांकित किया। प्रधानमंत्री ने यह भी बताया कि 2015 में सरकार ने 26 नवम्बर को संविधान दिवस घोषित किया था, जिससे इस पवित्र दस्तावेज का सम्मान किया जा सके। प्रधानमंत्री ने लिखा कि कैसे संविधान ने समान्य पृष्ठभूमि के लोगों को देश की सर्वोच्च सेवाओं में योगदान करने का सामर्थ्य दिया है। उन्होंने स्वयं संसद और संविधान के प्रति श्रद्धा के अपने अनुभव साझा किए. उन्होंने कहा कि 2014 में संसद की सीढ़ियों पर नमन करना और 2019 में संविधान को अपने माथे पर रखना, यह सब उनकी श्रद्धा का प्रतीक रहा, प्रधानमंत्री ने कहा कि संविधान ने अनगिनत नागरिकों को सपने देखने और उन्हें साकार करने की शक्ति दी है।

आरएसएस का संविधान से कोई वास्ता नहीं : जयराम रमेश

संविधान दिवस के अवसर पर, कांग्रेस सांसद और संचार प्रभारी महासचिव जयराम रमेश ने बुधवार को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) और केंद्र पर तीखा हमला बोला और संवैधानिक सिद्धांतों का उल्लंघन करने का आरोप लगाया। भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद और अंतिम गवर्नर-जनरल सी. राजगोपालाचारी का हवाला देते हुए, रमेश ने पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू, भारत के पहले गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल और संविधान प्रारूप समिति के प्रमुख डॉ. बीआर अंबेडकर सहित संविधान निर्माताओं की सराहना की।

कांग्रेस नेता ने कहा कि आरएसएस ने संविधान के प्रारूपण में कोई भूमिका नहीं निभाई और आरोप लगाया कि वर्तमान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमित शाह संविधान का विघटन कर रहे हैं। एक एक्स पोस्ट में, जयराम रमेश ने लिखा कि संविधान निर्माण के इतिहास का वह हिस्सा जिसमें आरएसएस की कोई भूमिका नहीं थी। वास्तव में, संविधान को अपनाने के बाद उसकी भूमिका उस पर हमला करने और उसे कमजोर करने की थी, और यही भूमिका वर्तमान प्रधानमंत्री और गृह मंत्री ने आगे बढ़ाई है, जो सुनियोजित तरीके से संवैधानिक सिद्धांतों, प्रावधानों और प्रथाओं को नष्ट कर रहे हैं। कांग्रेस सांसद ने 26 नवंबर, 1949 को संविधान सभा की बैठक में डॉ. राजेंद्र प्रसाद के भाषण को याद किया, जिस दिन संविधान को औपचारिक रूप से अपनाया गया था। रमेश ने कहा कि शनिवार, 26 नवंबर 1949 को सुबह 10 बजे संविधान सभा की बैठक हुई, जिसमें डॉ. राजेंद्र प्रसाद अध्यक्ष थे। डॉ. अंबेडकर द्वारा पिछले दिन प्रस्तुत भारत के संविधान के मसौदे को औपचारिक रूप से अपनाने के प्रस्ताव को मतदान के लिए रखने से पहले, डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने अपनी टिप्पणी की।

ममता के बयान पर मचा घमासान

टीएमसी व भाजपा में छिड़ी तीखी बहस, बीजेपी बोली- उसी भाषा में मिलेगा जवाब

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। बंगाल में अगले साल चुनाव है। पर वहां का सियासी अभी से चढ़ने लगा है। टीएमसी व भाजपा में एक दूसरे पर वार-पलटवार जारी है। उधर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की मेरे साथ खेलने की कोशिश मत करो वाले बयान पर घमासान मच गया है। भाजपा अध्यक्ष समिक भट्टाचार्य ने टिप्पणी पर निशाना साधा और कहा कि आगामी बंगाल विधानसभा चुनावों में तृणमूल कांग्रेस का सफाया हो जाएगा। भाजपा नेता की यह टिप्पणी ऐसे समय में आई है जब पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर भाजपा नीत केंद्र और भारत के चुनाव आयोग पर लगातार हमला बोल रही हैं।

एएनआई से बात करते हुए, भट्टाचार्य ने कहा कि किसी संवैधानिक संस्था को चुनौती देना मुख्यमंत्री के पद के अनुरूप नहीं है। उन्होंने कहा,अगर संविधान को चुनौती दी जाती है, तो संविधान भी उसी भाषा में जवाब देगा। उन्होंने कहा कि उन्हें जो करना है करने दीजिए। पहले उन्हें पश्चिम बंगाल भाजपा को मिटाकर दिखाने दीजिए, तभी वे पूरे भारत में भाजपा को चुनौती दे पाएँगी। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने मंगलवार को भाजपा नीत केंद्र सरकार की तीखी आलोचना करते हुए दावा किया कि राज्य में चुनाव अभी शुरू होने बाकी हैं, लेकिन टकराव शुरू हो चुका है। बनगांव में एक रैली में बोलते हुए, बनर्जी ने आरोप लगाया कि उन्हें हेलीकॉप्टर का उपयोग करने की अनुमति नहीं दी गई, जिससे उनके आगमन में देरी हुई। उन्होंने भाजपा को चेतावनी दी कि उनसे मुकाबला करने की कोई भी कोशिश सफल नहीं होगी।

'एसआईआर प्रक्रिया से असली मतदाताओं को नहीं हटाया जाए'

मुख्यमंत्री ने यह भी बताया कि हालाँकि उनकी सरकार एसआईआर प्रक्रिया का विरोध नहीं करती है, लेकिन असली मतदाताओं को नहीं हटाया जाना चाहिए। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि सरकारें लोगों द्वारा बदली जानी चाहिए, लेकिन, उन्होंने कहा, वर्तमान में व्यवस्था में ही बदलाव किया जा रहा है। ममता बनर्जी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि मैंने सोचा था कि हम सरकारी हेलीकॉप्टर का इस्तेमाल कर सकते हैं। लेकिन आज सुबह 10 बजे मुझे बताया गया कि हेलीकॉप्टर उड़ान नहीं भरेगा। चुनाव अभी शुरू नहीं हुआ है, लेकिन टकराव शुरू हो चुका है। लेकिन उन्हें यह एहसास नहीं है कि यह मेरे पक्ष में काम कर गया। क्योंकि यहाँ आते-जाते मैं बहुत से लोगों से मिली, और मैं उनसे जुड़ सकी और उनके साथ घनिष्ठ संबंध बना सकी। मैं भाजपा से कहती हूँ-मेरे साथ खेलने की कोशिश मत करो क्योंकि तुम मुझसे मुकाबला नहीं कर पाओगे। चुनाव आयोग 12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में मतदाता सूचियों के एसआईआर के दूसरे चरण का संचालन कर रहा है, जिसकी अंतिम मतदाता सूची 7 फ़रवरी, 2026 को प्रकाशित की जाएगी।

लोकतंत्र दांव पर हो तो लोगों को संविधान द्वारा प्रदत्त मार्गदर्शन की रक्षा करनी चाहिए

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बुधवार को कहा कि जब लोकतंत्र दांव पर हो, धर्मनिरपेक्षता ''खतरे में हो'' और संघवाद को ''ध्वस्त किया जा रहा हो'', तो लोगों को संविधान द्वारा प्रदत्त मूल्यवान मार्गदर्शन की रक्षा करनी चाहिए। बनर्जी ने कहा कि संविधान राष्ट्र की रीढ़ है, जो भारत की संस्कृतियों, भाषाओं और समुदायों की विविधता को कुशलतापूर्वक एक साथ पिरोता है। उन्होंने कहा, ''मेरा मानना है कि हमारा संविधान हमारे राष्ट्र की रीढ़ है, जो हमारी संस्कृतियों, भाषाओं और समुदायों की अपार विविधता को कुशलतापूर्वक एक एकीकृत, संघीय ढांचे में पिरोता है। इस पवित्र दिन पर हम अपने संविधान में निहित मूल लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुनः पुष्टि करते हैं और उन पवित्र सिद्धांतों की सतर्कतापूर्वक रक्षा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं जो हमें एक राष्ट्र के रूप में परिभाषित करते हैं और बनाए रखते हैं।'' उन्होंने कहा, ''अब जब लोकतंत्र दांव पर है, जब धर्मनिरपेक्षता खतरे में है, जब संघवाद को ध्वस्त किया जा रहा है, ऐसे महत्वपूर्ण समय में हमें अपने संविधान द्वारा प्रदत्त मूल्यवान मार्गदर्शन की रक्षा करनी चाहिए।'' संविधान को अंगीकार किए जाने के उपलक्ष्य में वर्ष 2015 से हर साल 26 नवंबर को संविधान दिवस मनाया जाता है। 26 नवंबर, 1949 को संविधान को अंगीकृत किया गया था। संविधान के कुछ प्रावधान तुरंत लागू हो गए थे तथा शेष प्रावधान 26 जनवरी 1950 को भारत के गणतंत्र बनने पर लागू हुए थे।

मुझे हराने का दम नहीं, चुनाव आयोग अब बीजेपी कमीशन

ममता ने कहा कि भाजपा राजनीतिक रूप से मेरा मुकाबला नहीं कर सकती और न ही मुझे हरा सकती है। उन्होंने कहा कि 'इलेक्शन कमीशन' अब एक निष्पक्ष संस्था नहीं रह गई है, यह 'बीजेपी कमीशन' बन गई है। बनर्जी ने सवाल किया कि क्या भाजपा शासित राज्यों में एसआईआर का आयोजन यह दर्शाता है कि केंद्र सरकार स्वीकार करती है कि वहां घुसपैठिया मौजूद हैं। उन्होंने कहा कि मैं बीरभूम में पैदा हुई, वरना मुझे भी बांग्लादेशी कहते। अपने भाषण की शुरुआत में ममता ने हेलीकॉप्टर को लेकर भाजपा पर हमला बोला। उन्होंने कहा, मैं हेलीकॉप्टर का इस्तेमाल नहीं करती। मैं कार से चलती हूँ। राज्य सरकार के पास एक हेलीकॉप्टर है। यह किराए पर है। मुझे सुबह 10 बजे यहाँ आना था। सुबह अचानक पता चला कि हेलीकॉप्टर नहीं जाएगा। चुनाव से पहले ही झगड़ा शुरू हो गया था। लेकिन मेरे लिए यह अच्छा रहा। रास्ते में कई जगह घूमा। लोगों से बातें कीं।

जीरो टॉलरेंस नीति को नगर निगम ने कर दिया जीरो

» बाबुओं ने शासनादेश की उड़ा दी धज्जियां, लेखा में जमे हैं 8 सालों से बाबू

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। नगर निगम लखनऊ के पर्यावरण विभाग में कार्यरत द्वितीय श्रेणी लिपिक इमरान अहमद पिछले आठ वर्षों से विभाग में प्रभावशाली भूमिका निभा रहे हैं, आर आर विभाग से बीते कुछ सालों पहले हो चुका है निलंबन जिसके के बाद उन्हें अधिष्ठान विभाग में संबद्ध किया गया था लेकिन उसके बाद पर्यावरण विभाग में अपनी जुगाड लगाकर बीते कई वर्षों से पैठ बनाए हुए है जहां आज तक उनकी तैनाती नहीं बदली गई।

विभागीय सूत्रों के अनुसार इमरान अहमद लंबे समय से सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट के बजट और स्वच्छता से जुड़े वित्तीय मामलों का महत्वपूर्ण कार्य संभाल रहे हैं। नगर निगम में धारा 108 के अंतर्गत तैनात कई कर्मचारी बिना वार्षिक आदेश जारी हुए वर्षों से पदस्थ हैं, जबकि नियमों के अनुसार एक वर्ष की अवधि के बाद आदेश का नवीनीकरण अनिवार्य होता है। लंबे समय से आदेश न होने पर प्रशासनिक पारदर्शिता पर सवाल उठ रहे हैं।

विभाग में अधिकारों की जंग

सूत्र बताते हैं कि विभाग के अंदर बजट और स्वच्छता परियोजनाओं से जुड़ी फाइलों को लेकर अधिकारों की खींचतान बनी हुई है। फाइलों के अनुमोदन और पासिंग को लेकर विवाद के चलते कई प्रस्ताव लंबित पड़े हुए हैं, जिससे कार्यप्रणाली गंभीर रूप से प्रभावित हुई है।

बिलों की फाइलों की देखरेख

सूत्रों के अनुसार इमरान अहमद सहित अन्य कर्मी विभिन्न स्वच्छता एजेंसियों के बिलों और बजट से संबंधित दस्तावेजों का सत्यापन करते हैं। आरोप है कि बिना विभागीय अनुमति कोई भी फ़ाइल आगे नहीं बढ़ती, जिससे कई आवश्यक कार्य समय पर पूरे नहीं हो पा रहे हैं।

लखीमपुर खीरी में कार अनियंत्रित होकर नाले में गिरी, पांच की मौत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। लखीमपुर खीरी जिले के ढखेरवा-गिरिजापुरी बैराज रोड पर गजियापुर के पास एक कार अनियंत्रित होकर शारदा नहर के किनारे बने पक्के नाले में गिर गई, जिससे पांच लोगों की मौत हो गई और एक व्यक्ति घायल हो गया। यह हादसा पढुवा थाना क्षेत्र में मंगलवार व बुधवारकी दरम्यानी रात हुआ।

पुलिस उप निरीक्षक (एसआई) ने बताया कि मृतकों की पहचान जितेंद्र (23), घनश्याम (25), लालजी (45), अजीमुल्ला (45) और सुरेंद्र (56) के रूप में हुई है। ये सभी बहराइच जिले के रहने वाले थे। इनके शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। सिंह ने कहा, हादसे में जीवित बचे व्यक्ति की पहचान सूरज उर्फ बब्बू के रूप में हुई है, जो बहराइच का ही रहने वाला है और गाड़ी चला रहा था। उसे रमियाबेहर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसकी हालत खतरे से बाहर बताई। पुलिस के मुताबिक, सभी छह लोग एक दोस्त के रिश्तेदार की शादी में शामिल होने के बाद बहराइच लौट रहे थे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। महाराष्ट्र कार्यालय:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in | RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।